राम द्वारा सीता का निर्वासन एवं शम्बूक वध : सर्वथा झूठी कहानियाँ

(ये आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ही नहीं हैं)

लेखक द्वारा स्वयं प्रकाशित

राम द्वारा सीता का निर्वासन
एवं
शम्बूक वध :
सर्वथा झूठी कहानियाँ

(ये आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ही नहीं हैं)

डा. रजनीरमण झा

प्रकाशक :
डा. रजनीरमण झा

पुस्तक पाने का पता
डा. रजनीरमण झा
सी-192 ए
खतूरिया कॉलोनी, बीकानेर 334003 (राजस्थान)
e-mail: rajniramanjha1967@gmail.com

© डा. रजनीरमण झा
चतुर्थ संस्करण : 2020 ई.

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003 ISBN 978-93-5426-224-1

Ram Dwaara Sita Ka Nirvaasan Evam Shambook Vadh :
Sarvtha Jhoothi Kahaaniyan by Dr. Rajni Raman Jha

श्रद्धेया दादी (स्व. छेदो देवी)
को सादर
एवं
अश्रुसहित
समर्पित

चतुर्थ संस्करण : 1000

राम द्वारा सीता का निर्वासन : एक झूठी कहानी

लोक में यह अपवाद प्रचलित है कि राम ने अपने शासनकाल में पुरवासियों के द्वारा लांछित होकर सीता का वन में निर्वासन कर दिया था। तथापि यदि वाल्मीकिरामायण का सघन एवं आद्योपान्त अध्ययन किया जाय, तो यह काँच की भाँति साफ हो जाता है कि सीता निर्वासन की कथा एकदम झूठी है। यह आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की रचना है ही नहीं। यह किसी अन्य कवि की रचना है, जो वाल्मीकिरामायण की रचना के सहस्रों वर्ष बाद इसमें जोड़ी गयी। सच यही है कि भगवान् राम ने भगवती सीता का कभी परित्याग नहीं किया। वह सदैव उनके साथ रहीं और अयोध्या की महारानी बनकर रहीं।

इस शोधग्रन्थ में इस सच को स्थापित करने के लिए किसी अन्य ग्रन्थ का सहारा नहीं लिया गया है, अपितु वाल्मीकिरामायण के प्रचलित ग्रन्थ-संस्करण से ही बिन्दु निकाले गये हैं, जो इस सत्य को सुतरां सिद्ध करते हैं कि भगवती सीता का निर्वासन एक षड्यन्त्र से भरी झूठी कथा है, जो राम, सीता और वाल्मीकि तीनों को नीचा दिखाने के लिए लिखी गयी थी।

अस्तु, हम बिन्दुवार इसका अध्ययन करते हैं।

वाल्मीकिरामायण की रचना

सबसे पहले वाल्मीकिरामायण की रचना को समझें। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित इस रामायण में वर्तमान समय में सातकाण्ड दिखाये या पढ़ाये जाते हैं—बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड में कुछ सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग श्लोकों का संग्रह है। इस प्रकार वाल्मीकिरामायण में सात काण्ड, पाँच सौ सर्ग एवं चौबीस हजार श्लोक हैं।

वाल्मीकिरामायण के बारे में कहा जाता है कि इसमें पहले चौबीस हजार श्लोक नहीं थे। वाल्मीकि ने इससे बहुत कम श्लोक रचे थे। बाद में इसका उपबृंहण हुआ। यह विस्तार किसने किया, यह कोई नहीं बता पाता। पर वाल्मीकिरामायण को पढ़ने से यह अवश्य लगता है कि विस्तार निश्चित हुआ है। कभी-कभी कथा का भटक जाना, कभी अनावश्यक रूप से बढ़ जाना, अवान्तर कथाओं का अप्रासङ्गिक रूप से आ जाना, भाषा की भिन्नता आदि का स्पष्ट रूप से दीखना इत्यादि कुछ विषय इस ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि रामायण का विस्तार हुआ है। रामायण में बहुत से प्रक्षिप्त अंश हैं। बालकाण्ड का बड़ा भाग प्रक्षिप्त है। अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड तक बहुत से क्षेपक हैं। और समूचा उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है।

यही इस शोधग्रन्थ की आधारभूमि है कि उत्तरकाण्ड को वाल्मीकि ने नहीं, किसी अन्य कवि ने लिखा है। अस्तु, इस पर आगे चर्चा होगी।

नारद और वाल्मीकि

रामायण के प्रारम्भ में नारद वाल्मीकि के समक्ष राम के रूप व गुणों की प्रशंसा करते हैं। वाल्मीकि विचार करते हुए तमसा नदी में स्नान करने जाते हैं। वहाँ क्रौञ्च पक्षी का एक जोड़ा विहार कर रहा है। एक व्याध उसमें से नर को मार देता है। मादा चीत्कार करने लगती है। तभी वाल्मीकि के मुख से यह श्लोक निकल पड़ता है, जो उनके शोक की अभिव्यक्ति है—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

अर्थात्—हे व्याध! तुमको चिरकाल तक प्रतिष्ठा न मिले यानी तुम निन्दित होते रहो, क्योंकि तुमने काममोहित क्रौञ्च के जोड़े में से एक को मार डाला।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक-१५)

वाल्मीकि स्वयं चकित होते हैं कि उनके मुख से यह क्या निकला। तब ब्रह्माजी उनको बताते हैं कि तुम्हारे मुख से यह श्लोक निकला है। अब तुम इसी के आधार पर महाकाव्य की रचना करो।

तब वाल्मीकि अपने योगबल से सारी रामकथा को देखते हैं। फिर वे रामायण की रचना करते हैं। इसका अन्य नाम पौलस्त्यवध या दशाननवध भी है।

तब वाल्मीकि अपने आश्रम में रह रहे दो राजकुमारों, जो कुशीलव भी हैं, को रामायण पढ़ाते और उनको रामायण

गाना भी सिखाते हैं। वे दोनों कुशीलव राम के दरबार में रामायण गाकर सुनाते हैं। आगे रामायण की कथा तो सबको ज्ञात है ही।

विषय प्रवेश

राम का स्त्री के प्रति व्यवहार

अब जो हमारा विषय है—राम द्वारा सीता का निर्वासन : एक झूठी कहानी—इसको समझने के लिए हमें सबसे पहले राम का स्त्री के प्रति व्यवहार समझना होगा। पूरी वाल्मीकिरामायण में राम ने सभी स्त्री पात्रों के प्रति बड़ा गहरा आदर दर्शाया है। माता कौसल्या, सुमित्रा, वालिपत्नी तारा, रावणपत्नी मन्दोदरी आदि सबके प्रति हार्दिक सम्मान प्रकट किया है। कैकेयी के प्रति भी, एक-दो स्थानों को छोड़कर, उनका आदरभाव ही प्रकट हुआ है।

तीन प्रसङ्ग विशेष उल्लेखनीय हैं।

ताटका प्रसङ्ग

यह कथा सबको ज्ञात है कि राम और लक्ष्मण को उनकी किशोरावस्था में ही महर्षि विश्वामित्र उनके पिता दशरथ से माँगकर ले गये थे। उसका कारण यह था कि ताटका नाम की एक राक्षसी अपने पुत्र मारीच तथा सुबाहु नामक राक्षस के साथ मलद और करूष नामक जनपद में ऋषियों के यज्ञों का विध्वंस करती रहती थी। वे राक्षस ऋषियों को मारकर खा

जाते थे। उनका संहार किया जाना आवश्यक हो गया था। राम ही उनका संहार कर सकते थे। तो विश्वामित्र ने राम को माँगा और राम चलने के लिए तैयार हुए तो लक्ष्मण भी उनके संग हो गये।

जब वे मलद और करूष जनपद पहुँचे, तो ताटका से राम का सामना हुआ। राम ने ताटका पर बाण का सन्धान कर लिया। किन्तु वे उसको मारने से बचने लगे। कहने लगे—

विनिवृत्तां करोम्यद्य हृतकर्णाग्रनासिकाम्।।
न ह्येनामुत्सहे हन्तुं स्त्रीस्वभावेन रक्षिताम्।
वीर्यं चास्या गतिं चैव हन्यतामिति मे मतिः।।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग–२६, श्लोक ११ व १२)

अर्थात् इसके नाक-कान काटकर इसको पीछे लौटने के लिए विवश कर देता हूँ। यह अपने स्त्री स्वभाव के कारण रक्षित है, अतः इसको मारने में मुझे उत्साह नहीं है। मेरा विचार है कि मैं इसके इस बल पराक्रम तथा गमन शक्ति को नष्ट कर डालूँ।

इसका अर्थ यह हुआ कि राम किसी स्त्री की हत्या नहीं करना चाहते थे। वे इससे बचना चाहते थे। तब विश्वामित्र ने राम को कहा कि इस ताटका पर दया करना व्यर्थ है। यह सदा ही यज्ञों में विघ्न डाला करती है। पहले भी विश्वामित्र राम को बता चुके थे कि वह नर-भक्षिणी है। तब सब बातों का स्मरण करके और गुरु की आज्ञा मानकर राम ने बाण मारकर ताटका की छाती चीर डाली। वह गिर कर मर गयी।

ऐसे हैं राम। ताटका जैसी पापिनी, दुराचारिणी तथा नरभक्षिणी को भी नहीं मारना चाहते क्योंकि वह स्त्री है। स्त्री राम के लिए अवध्या है।

बाद में राम ने सुबाहु को भी युद्ध में मार डाला तथा मारीच को ऐसा बाण मारा कि वह भी सौ योजन दूर लङ्का के समुद्र तट पर जाकर गिरा। यह वही मारीच था, जो स्वर्णमृग का रूप धरकर सीता को प्रलोभित कर राम को दूर ले गया और उसके बाद सीता का अपहरण हो गया।

अहल्या प्रसङ्ग

अहल्या का प्रसङ्ग तो कुछ विशेष ही उल्लेखनीय है। कथा सबको ज्ञात है कि अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी थीं। एक बार ऋषि गौतम की अनुपस्थिति में देवराज इन्द्र उनके पास ऋषि गौतम का रूप धारणकर आये थे। देवराज इन्द्र को पहचानकर भी अहल्या उन पर आसक्त हुईं और उनसे समागम किया।

बाद में ऋषि गौतम ने उनको शाप दिया कि वे उसी आश्रम में कई सहस्र वर्षों तक हवा पी कर या उपवास करके राख में पड़ी रहेंगी। समस्त प्राणियों से अदृश्य रहेंगी। आगे जब कभी दशरथकुमार राम उस वन में पदार्पण करेंगे, तो वे उनका आतिथ्य-सत्कार करके पवित्र होंगी और अपना पूर्वशरीर धारण करेंगी।

राम जब ऋषि विश्वामित्र और लक्ष्मण के साथ ताटका-वध के उपरान्त मिथिला की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने अहल्या का सुनसान आश्रम देखकर उनसे इसका कारण पूछा।

विश्वामित्र ने उनको पूरा वृत्तान्त सुनाया और अहल्या का उद्धार करने के लिए राम को कहा।

राम ने ऋषि और लक्ष्मण सहित उस आश्रम में प्रवेश किया। अहल्या अपनी तपस्या के कारण देदीप्यमान हो रही थीं। तो भी मनुष्य तथा देवता उनको देख नहीं पाते थे, क्योंकि गौतम ऋषि का शाप उनको अदृश्य किये हुए था।

राम उनको देख पाये। अहल्या ने भी राम को देखा। राम को देखते ही उनके शाप का अन्त हो गया और वे सबको दिखायी देने लगीं।

तब दोनों भाइयों ने अहल्या के चरणस्पर्श किये। अहल्या ने भी गौतम ऋषि के शाप का स्मरण करते हुए दोनों भाइयों का आतिथ्य-सत्कार किया। पाद्य-अर्घ्य आदि प्रदान किये। राम ने उसे विधि के अनुसार ग्रहण किया।

राघवौ तु तदा तस्याः पादौ जगृहतुर्मुदा।
स्मरन्ती गौतमवचः प्रतिजग्राह सा हि तौ।
पाद्यमर्घ्यं तथाऽऽतिथ्यं चकार सुसमाहिता।
प्रतिजग्राह काकुत्स्थो विधिदृष्टेन कर्मणा।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-४९, श्लोक-१७-१८)

यह कथा थोड़े अलग ढंग से प्रस्तुत की गयी है। यदि तनिक सावधान होकर इसका विश्लेषण किया जाय, तो गौतम के शापवश अहल्या का अदृश्य हो जाना और कुछ नहीं गौतम और समाज द्वारा अहल्या का त्याग कर दिया जाना है। 'अदृश्य' का

एक अर्थ 'न देखने योग्य होना' भी है। अर्थात् अहल्या अब किसी के द्वारा देखने योग्य नहीं रही।

किन्तु राम ने उनको देखा। वे अपनी तपस्या के कारण द्योतितप्रभा अर्थात् चमक रही थीं।

यहाँ यह अद्भुत बात कवि ने कही है। अपनी तपस्या अर्थात् प्रायश्चित्त के कारण अहल्या न केवल शुद्ध हो गयी थीं, अपितु चमक भी रही थीं। राम ने इसे समझा। और उनके चरणस्पर्श करके मानो घोषणा कर दी कि अहल्या अब पापमुक्त हो चुकी हैं। उनके आतिथ्य-सत्कार को ग्रहण करके राम ने मानो उनके समाज में पुनः प्रवेश का द्वार ही खोल दिया। अब अहल्या समाज से अदृश्य अर्थात् बहिष्कृता नहीं रहीं। अब वे सबके लिए दृश्य अर्थात् स्वीकार करने योग्य हो गयीं।

देखा जाय तो राम ने यहाँ क्रान्तिकारी कदम उठाया है। जिस स्त्री ने स्वेच्छा से परपुरुष से समागम किया, उसके प्रायश्चित्त को भी राम ने मान्यता दी। पाप का अन्य भागी इन्द्र तो स्वर्ग का राजा बना रहा। तो अहल्या ही समाज से बहिष्कृत क्यों हो?

पुरुष पाप करके भी राजा बना रह जाय और स्त्री प्रायश्चित्त करके भी दण्ड भोगे, यह राम की दृष्टि में सर्वथा अनुचित है। अतः वे अहल्या का चरणस्पर्श करते हैं। उनका आतिथ्य-सत्कार स्वीकार करते हैं।

रुमा प्रसङ्ग

तीसरा प्रसङ्ग वालीवध का है। वाली ने सुग्रीव को भगा दिया

था, किन्तु उसकी पत्नी रुमा को रोक लिया था। वह उसके साथ व्यभिचार करता था। वाली का वध करने का सबसे बड़ा कारण राम वाली के अनुज सुग्रीव की पत्नी, पुत्रवधू के समान, रुमा को वाली द्वारा अपने पास रख लिया जाना और उसके साथ व्यभिचार करना बताते हैं—

अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
रुमायां वर्तसे कामात् स्नुषायां पापकर्मकृत्।।
तद् व्यतीतस्य ते धर्मात् कामवृत्तस्य वानर।
भ्रातृभार्याभिमर्शेऽस्मिन् दण्डोऽयं प्रतिपादितः।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-१८, श्लोक-१९-२०)

और वाली को मारकर राम ने सुग्रीव को उसकी पत्नी वापस दिलायी।

ये प्रसंग आगे सीता परित्याग का खण्डन करने में उपयोगी सिद्ध होंगे।

राम का सीता के प्रति प्रेम

यह वह बिन्दु है, जो राम को सबसे आदर्श पति के रूप में चित्रित करता है। सच तो यह है कि राम ने सीता को जितना प्रेम किया, वह दाम्पत्य जीवन में पति का पत्नी के प्रति एकात्मसम्बन्ध का मानदण्ड है।

इसे अधिकांश जन नहीं जानते, इसीलिए राम और सीता के विषय में अनर्गल प्रलाप किया करते हैं।

कैकेयी प्रसङ्ग–अयोध्या काण्ड से प्रारम्भ करते हैं। जब राम को वनवास होता है, तो वे सीता को कहते हैं कि मेरे माता-पिता वृद्ध हैं। मुझे वनवास में जाना होगा। अतः तुम अयोध्या में ही रुक जाओ। मेरे माता-पिता की सेवा करो।

इस पर सीता विलाप करने लगती है। तर्क देती हैं और कहती है कि मैं तुमसे पहले इस राजभवन से निकलूँगी। मार्ग में आने वाले काँटे-कंकड़ को साफ करती चलूँगी। राम को विश्वास हो जाता है कि सीता मानने वाली नहीं। तब वे प्रसन्न होकर कहते हैं—

आरभस्व शुभश्रोणि वनावासक्षमाः क्रियाः।
नेदानीं त्वदृते सीते स्वर्गोऽपि मम रोचते।।

अर्थात् हे सीते! वनवास चलने की तैयारी करो। अब तुम्हारे बिना मुझे स्वर्ग भी अच्छा नहीं लगता।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-३०, श्लोक-४२)

इससे पहले भी वे सीता को कह चुके हैं—

न देवि बत दुःखेन स्वर्गमप्यभिरोचये।

अर्थात् तुमको दुःख देकर मैं स्वर्ग का सुख भी नहीं लेना चाहता।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-३०, श्लोक-२७)

वनवास जाने के लिए श्रीराम ने वल्कल धारण कर लिए। सीता के लिए कैकेयी दो चीर (वनवास में पहनने योग्य वस्त्र) ले आयीं। गुरु वसिष्ठ ने कैकेयी को फटकारा कि वनवास तो राम को

हुआ है, सीता को नहीं। तो सीता को चीर क्यों? पर कैकेयी नहीं मानी। सीता ने वे चीर ले लिये। पर उनको चीर पहनना नहीं आता था। वे लज्जित होकर खड़ी हो गयीं। तब कल्पना कीजिए–भरी सभा है, माँएँ हैं, पिता हैं, मन्त्री हैं, सैनिक हैं, नौकर-चाकर हैं। उस सभा के मध्य श्रीराम आगे बढ़ते हैं और सीता को स्वयं चीर पहनाते हैं—

तस्यास्तत् क्षिप्रमागत्य रामो धर्मवृतां वरः।
चीरं बबन्ध सीतायाः कौशेयस्योपरि स्वयम्।।

अर्थात् तब राम जो धर्म को जानने वालों में श्रेष्ठ हैं, वे शीघ्रतापूर्वक आये और उन्होंने स्वयं सीता के रेशमी वस्त्रों के ऊपर वे चीर पहनाये।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-३७, श्लोक-१४)

क्षणभर के लिए अपनी पत्नी को लज्जित एवं दुःखी न देख पाने वाले राम सीता का निर्वासन कथित प्रजारञ्जन के नाम पर कर देते हैं, यह कैसे माना जा सकता है!

विराध प्रसङ्ग—वन में जाते समय विराध नामक एक राक्षस आता है और सीता को उठाकर ले जाने लगता है। तब श्रीराम व्याकुल होकर लक्ष्मण को कहते हैं—

परस्पर्शात् तु वैदेह्या न दुःखतरमस्ति मे।
पितुर्विनाशात् सौमित्रे स्वराज्यहरणात् तथा।।

अर्थात् विदेहनन्दिनी सीता का कोई परपुरुष स्पर्श कर ले,

इससे बढ़कर मेरे लिए दुःख नहीं। पिताजी की मृत्यु और राज्य के अपहरण से भी उतना कष्ट मुझे नहीं हुआ, जितना आज हुआ है।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-२, श्लोक-२१)

फिर वे विराध को गड्ढे में गिराकर उसका वध कर डालते हैं।

यह बार-बार उभरकर आ रहा है कि श्रीराम सीता के समक्ष स्वर्ग और अपना राज्य, दोनों को तुच्छ मानते हैं। फिर उसी राज्य के लिए सीता का परित्याग कर देना, यह कैसी उलटबाँसी है!

शूर्पणखा प्रसङ्ग

सीता, राम और लक्ष्मण सुखपूर्वक पञ्चवटी में अपना समय बिता रहे हैं। एक दिन राम और लक्ष्मण की वार्ता चल रही है। तभी वहाँ एक राक्षसी शूर्पणखा आ पहुँचती है। वह दशग्रीव रावण की बहन है।

वह राम के रूप पर मोहित होकर उनसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करती है। राम कहते हैं कि वे अपनी पत्नी सीता के साथ हैं, अतः वे उससे विवाह नहीं कर सकते। हाँ, यह मेरा भाई लक्ष्मण है जो स्त्री के बिना रह रहा है। तुम इससे विवाह कर लो।

तब शूर्पणखा लक्ष्मण के पास जाती है। उनसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करती है। लक्ष्मण अस्वीकार कर देते हैं। वह

पुनः राम के पास आती है और उनसे विवाह की इच्छा प्रकट करती है। राम पुनः सीता का हवाला देकर कहते हैं कि वे उससे विवाह नहीं कर सकते।

तब शूर्पणखा क्रोध से भर जाती है। और कहती है–राम! तुम इस कुरूप, ओछी, विकृत, धँसे पेट वाली और वृद्धा सीता के कारण से मुझे स्वीकार नहीं कर रहे हो। अतः तुम्हारे देखते ही देखते मैं इस मानुषी को खा जाऊँगी और इस सौत के न रहने पर तुम्हारे साथ सुखपूर्वक विचरण करूँगी।

ऐसा कहकर दहकते हुए अङ्गारों के समान नेत्रोंवाली शूर्पणखा अत्यन्त क्रोध में भर कर मृगनयनी सीता की ओर झपटी, मानो कोई बड़ी भारी उल्का रोहिणी नामक तारे पर टूट पड़ी हो।

इत्युक्त्वा मृगशावाक्षीमलातसदृशेक्षणा।
अभ्यगच्छत् सुसंक्रुद्धा महोल्का रोहिणीमिव।।

(वाल्मीकिरामायण अरण्यकाण्ड, सर्ग–१२, श्लोक–१७)

तब मृत्यु के फन्दे के समान आती हुई शूर्पणखा को रोककर राम ने लक्ष्मण को कहा।

तां मृत्युपाशप्रतिमामापतन्तीं महाबलः।
विगृह्य रामः कुपितस्ततो लक्ष्मणमब्रवीत्।।

(वाल्मीकिरामायण अरण्यकाण्ड, सर्ग–१८, श्लोक–१८)

राम ने लक्ष्मण को कहा कि देखो लक्ष्मण! किस प्रकार

सीता के प्राण इतनी मुश्किल से बचे हैं। इसको किसी अङ्ग से हीन कर दो। तब लक्ष्मण ने तलवार से शूर्पणखा के नाक-कान काट लिए।

जो शूर्पणखा के प्रसङ्ग में राम की आलोचना करते हैं, वे अब बताएँ कि राम ने क्या गलत किया। क्या वे सीता को मर जाने देते? वह कुरूपा राक्षसी अपना वेश बदलकर सुरूपा स्त्री के रूप में राम के समक्ष आयी थी। झूठ तो उसने वहीं से बोलना प्रारम्भ कर दिया था।

वहीं यह भी वर्णन है कि उसने आते ही सीता की निन्दा प्रारम्भ कर दी जबकि सीता ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। उससे तो भगवती सीता का परिचय भी नहीं था।

यह शूर्पणखा का कैसा प्रेम था कि पहले क्षण तो राम के प्रति प्रेम प्रकट करती है, राम के द्वारा लक्ष्मण के पास भेजे जाने पर लक्ष्मण के प्रति प्रेम प्रकट करने लगती है और लक्ष्मण द्वारा अस्वीकार किये जाने पर पुनः राम के प्रति ही प्रेम प्रकट करने लगती है।

और राम द्वारा इनकार किये जाने पर सीता को मारने के लिए उद्यत हो जाती है। क्या यह अपराध नहीं है? हत्या का प्रयास करना हत्या करने के बराबर का ही अपराध माना जाता है। इसके लिए शूर्पणखा को दण्डित होना चाहिए था या नहीं? यह तो राम की उदारता ही रही कि शूर्पणखा के नाक-कान कटवाकर छोड़ दिया। चाहते तो उसका वध भी कर सकते

थे। किन्तु याद कीजिए ताटका प्रसङ्ग। वहाँ भी वे ताटका का नाक-कान ही काटना चाहते हैं। वही वे यहाँ शूर्पणखा के साथ करते हैं। उसके नाक-कान कटवाकर छोड़ देते हैं। और राम की यह दया उन पर कितनी भारी पड़ी, यह सबको विदित है। सीता का अपहरण हुआ। वे यहाँ-वहाँ कितना भटके? रावण से युद्ध करना पड़ा। किन्तु अपने शील और सदाचरण के बल पर वे विजयी हुए। सत्य और धर्म का सहारा लेने वाले राम की विजय हुई।

यह शूर्पणखा प्रसङ्ग सीता के प्रति राम के अनन्य प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है।

स्वर्णमृग प्रसङ्ग—राम सीता की जिद पर ही स्वर्णमृग को पकड़ने गये। वस्तुतः वह केवल स्वर्णमृग ही नहीं था, अपितु उस पर अनेक रत्नों की प्रभा हो रही थी। पहले राम लक्ष्मण को कहते हैं—देखो लक्ष्मण! सीता इस स्वर्णमृग को देखकर इसको पाने के लिए कितनी उत्साहित और उल्लसित है। तो वह निश्चय ही इस रत्नस्वरूप मृग के चर्म पर मेरे साथ बैठेगी।

लक्ष्मण उस स्वर्णमृग पर सन्देह करते हैं और उसे किसी मायावी राक्षस की माया बताते हैं। तब वे लक्ष्मण को यह भी कहते हैं कि यदि वह मायावी राक्षस मारीच है, तो इसका मरना तो और आवश्यक है।

सीता रामचन्द्रजी को वह रत्नस्वरूप मृग को जीवित या मृत लाने के लिए कहती है। तब श्रीराम लक्ष्मण को कहते हैं—

अस्यामायत्तमस्माकं यत्कृत्यं रघुनन्दन।
अहमेनं वधिष्यामि ग्रहीष्याम्यथवा मृगम्।।

अर्थात् हमारा जो आवश्यक कर्तव्य है, वह सीता के ही अधीन है। यानी सीता जो कहेगी, वही होगा। मैं इस मृग को या तो मार डालूँगा अथवा जीता ही पकड़ लाऊँगा।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-४३, श्लोक-४७)

फिर वे सीता की प्रसन्नता के लिए उस स्वर्णमृग को जीवित या मृत लाने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

अपहरण प्रसङ्ग—जब सीता का अपहरण हो जाता है, उसके बाद जब राम और लक्ष्मण आश्रम में लौट रहे होते हैं, तो राम को आशङ्का होने लगती है कि सीता के साथ कुछ अनिष्ट घट चुका है। वे बड़बड़ाने लगते हैं—जिसके बिना मैं दो घड़ी जीवित नहीं रह सकता, जो प्राणों की सहचरी है, वह देवकन्या के समान सीता कहाँ होगी?—

यां विना नोत्सहे वीर मुहूर्तमपि जीवितुम्।
क्व सा प्राणसहाया मे सीता सुरसुतोपमा।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-५८, श्लोक-४)

लक्ष्मण! यदि विदेहनन्दिनी सीता जीवित होगी, तभी मैं आश्रम में पैर रखूँगा। यदि सदाचारपरायणा मैथिली मर गयी होगी, तो मैं भी प्राणों का त्याग कर दूँगा। यदि मेरे आश्रम जाने पर हँसती हुई सीता ने आगे आकर मुझसे बात नहीं की, तो मैं अपने आपको समाप्त कर लूँगा। —

यदि जीवति वैदेही गमिष्याश्रमं पुनः।
संवृत्ता यदि वृत्ता सा प्राणांस्त्यक्ष्यामि लक्ष्मण।।
यदि मामाश्रमगतं वैदेही नाभिभाषते।
पुरः प्रहसिता सीता विनशिष्यामि लक्ष्मण।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-५८, श्लोक-९ व १०)

विलाप प्रसङ्ग—अरण्यकाण्ड के ५८, ६०, ६१, ६२ एवं ६३, इन पाँच सर्गों के १२९ श्लोकों में श्रीराम ने सीता के लिए जो आशङ्का एवं विलाप किया, वह इस बात को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि राम किसी भी सूरत में सीता का परित्याग नहीं कर सकते। ६०वें सर्ग में श्रीराम विलाप करते हुए वृक्षों और पशुओं से सीता का पता पूछने लगते हैं। कदम्ब, बिल्व, अर्जुन, कुटज, अशोक, ताल, जामुन, कनेर, बकुल, पुन्नाग, चन्दन, केवड़ा आदि वृक्ष तथा हरिण, गज, व्याघ्र जैसे पशुओं से सीता की जानकारी देने की याचना करने लगते हैं।

बाघ को वे कहते हैं कि तुमने यदि सीता को देखा है, तो निस्संकोच उसका पता बता दो। फिर मुझसे तुमको कोई भय नहीं होगा।—

शार्दूल यदि सा दृष्टा प्रिया चन्द्रनिभानना।
मैथिली मम विस्रब्धः कथयस्व न ते भयम्।।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-६०, श्लोक-२५)

लक्ष्मण के सान्त्वना देने पर ध्यान न देकर अपनी प्यारी पत्नी को न देखकर वे बारम्बार सीता को पुकारने और रोने लगते हैं। वे

कनेर या अशोक की ओट में सीता के छिपने की सम्भावना करते हुए कहते हैं—'सीता तुम अब लुकाछिपी का खेल मत खेलो। सामने आ जाओ। तुम्हारे इस हास-परिहास से मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। तुम्हारे बिना यह पर्णशाला सूनी है।'

फिर वे सूर्यदेव और वायुदेव से सीता का पता पूछने लगते हैं। सूर्यदेव को कहते हैं—'आप तो सत्य-असत्य के साक्षी हैं, तो सीता का अपहरण किसने किया, यह मुझे बताइए।'

वायुदेव को कहते हैं कि आपको तो सब कुछ ज्ञात है, तो मेरी कुलपालिका सीता कहाँ है? वह मर गयी, उसका अपहरण हो गया या कहीं मार्ग में ही है?' —

शंसस्व वायो कुलपालिनीं तां
मृता हृता पथि वर्तते वा।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-६३, श्लोक-१७)

क्रोध प्रसङ्ग—और तब आता है अरण्यकाण्ड का ६४वां सर्ग, जब राम सीता को न पाकर क्रुद्ध हो उठते हैं। वहाँ प्रस्रवण पर्वत है, जिस पर रावण द्वारा अपहृत सीता के केशों से फूल गिरे हैं। वे उनसे सीता का पता पूछते हैं। पर्वत के उत्तर न देने पर वे उसके शिखरों का विध्वंस करने के लिए उद्यत हो जाते हैं। उससे झरती नदी को सुखा डालना चाहते हैं। वहीं टूटे रथ, धनुष आदि को देखकर, जो जटायु-रावण के युद्ध में वहीं गिरे थे, राम को सीता के मारे जाने का भ्रम होता है। तब वे अत्यन्त कुपित हो उठते हैं और कहते हैं कि अब मुझे पुरुषार्थ प्रकट करना होगा।

आज ही मेरा तेज समस्त प्राणियों का अन्त कर देगा। न यक्ष, न गन्धर्व, न पिशाच, न राक्षस, न किन्नर, न मनुष्य, कोई अब चैन से नहीं रहने पायेंगे। थोड़ी देर में ही आकाश को मैं अपने चलाये बाणों से भर दूँगा और लोकों में विचरने वाले प्राणियों को हिलने-डुलने भी नहीं दूँगा।—

ममास्त्रबाणसम्पूर्णामाकाशं पश्य लक्ष्मण।
असम्पातं करिष्यामि ह्यद्य त्रैलोक्यचारिणम्।।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-६४, श्लोक-५९)

देवताओं, दानवों, यक्षों और राक्षसों के जो लोक हैं, वे मेरे बाणसमूहों से टुकड़े-टुकड़े होकर बारम्बार नीचे गिरेंगे।—

देवदानवयक्षाणां लोका ये रक्षसामपि।
बहुधा निपतिष्यन्ति बाणौघैः शकलीकृताः।।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-६४, श्लोक-६८)

बहुत मुश्किल से लक्ष्मण राम को समझा-बुझाकर शान्त करते हैं।

वसन्त और पम्पासरोवर प्रसङ्ग—किष्किन्धाकाण्ड में एक पम्पा सरोवर का वर्णन है। वह सरोवर बड़ा ही रमणीय है। उसे देखकर उसका वर्णन करते हुए राम बारम्बार सीता को याद करके व्याकुल हो रहे हैं। यहाँ आदिकवि महर्षि वाल्मीकि का अद्‌भुत कवित्व राम के द्वारा कहे गये वाक्यों में प्रकट होता है। राम कहते हैं—वन के रमणीय झरने के निकट बड़े हर्ष से बोलता हुआ यह जलकुक्कुट सीता से मिलने की इच्छावाले

मुझ राम को शोकमग्न किये देता है। जान पड़ता है, यह वसन्त रूपी आग मुझे जलाकर भस्म कर देगी। अशोक पुष्प के लाल-लाल गुच्छे ही इस अग्नि के अङ्गार हैं। नूतन पल्लव ही लाल-लाल लपटें हैं, तथा भ्रमरों का गुञ्जारव इस जलती आग का चट-चट शब्द है।—

अशोकस्तबकाङ्गारः षट्पदस्वननिःस्वनः।
मां हि पल्लवताम्रार्चिर्वसन्ताग्निः प्रधक्ष्यति।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-२९)

राम कल्पना करते हैं कि जहाँ भी अपहृत सीता इस समय होगी, यदि वहाँ भी वसन्त ने प्रवेश कर लिया होगा, तो वह मेरे विरह में प्राण त्याग देगी। इस कल्पना से राम को पीड़ा होती है। फिर वे उस सत्य को उद्घाटित करते हैं, जो सीता-राम के बारे में आज तक आदर से याद किया जाता है। वे कहते हैं—वास्तव में विदेह कुमारी का हार्दिक अनुराग मुझमें और मेरा सम्पूर्ण प्रेम सर्वथा विदेहनन्दिनी सीता में ही प्रतिष्ठित है।—

मयि भावो हि वैदेह्यास्तत्त्वतो विनिवेशितः।
ममापि भावः सीतायां सर्वथा विनिवेशितः।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-५२)

वे आगे कहते हैं कि कमलदल जिसे प्रिय रहे, उस प्रफुल्ल कमल के समान आँखों वाली सीता के बिना जीवित रहना मुझे अच्छा नहीं लगता है।—

पद्मपत्रविशालाक्षीं सततं प्रियपङ्कजाम्।
अपश्यतो मे वैदेहीं जीवितं नाभिरोचते।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-६७)

और पम्पासर के बारे में बोलते हुए कहते हैं कि सुमध्यमा सीता मेरे साथ रहकर इस पम्पा सरोवर के तट पर सुखद समीर का सेवन कर सके, तो ही मैं जीवित रह सकता हूँ।—

जीवेयं खलु सौमित्रे मया सह सुमध्यमा।
सेवेत यदि वैदेही पम्पायाः पवनं शुभम्।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-१०३)

वर्षा प्रसङ्ग—किष्किन्धाकाण्ड में वर्षा के वर्णन में राम कहते हैं कि मेरे महान् राज्य से मैं भ्रष्ट हो गया। मेरी स्त्री हर ली गयी। इसलिए इस वर्षा ऋतु में पानी से गले हुए नदी के तट के समान मैं कष्ट पा रहा हूँ।—

अहं तु हृतदारश्च राज्याच्च महतश्च्युतः।
नदीकूलमिव क्लिन्नमवसीदामि लक्ष्मण।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-२२, श्लोक-१)

शरत् प्रसङ्ग—शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए राम सीता को याद करके बहुत विलाप करते हैं। कहते हैं—मैं नदी, तालाब, बावली, कानन, वन सब जगह घूमता हूँ, परन्तु कहीं भी मृगशावकनयनी सीता के बिना अब मुझे सुख नहीं मिलता है।

कहीं ऐसा तो नहीं कि शरद् ऋतु के गुणों से निरन्तर वृद्धि

को प्राप्त होने वाला काम भामिनी सीता को अत्यन्त पीड़ित कर दे, क्योंकि उसे मेरे वियोग का कष्ट है और दूसरे वह अत्यन्त सुकुमारी हैं।

इन्द्र से पानी की याचना करने वाले प्यासे पपीहे की भाँति नरश्रेष्ठ राजकुमार राम ने इस तरह की बहुत-सी बातें कहकर विलाप किया।—

एवमादिं नरश्रेष्ठो विललाप नृपात्मजः।
विहङ्ग इव सारङ्गः सलिलं त्रिदशेश्वरात्।।

(वाल्मीकिरामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग-३०, श्लोक-१३)

शोक प्रसङ्ग—सुन्दरकाण्ड में राम कहते हैं कि समय के साथ व्यक्ति का शोक कम हो जाता है, किन्तु मेरा शोक तो पत्नी को नहीं देख पाने के कारण बढ़ता ही जा रहा है।—

शोकश्च किल कालेन गच्छता ह्यपि गच्छति।
मम चापश्यतः कान्तामहन्यहनि वर्धते।।

(वाल्मीकिरामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग-५, श्लोक-४)

यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि यह दुःख उन्होंने तब प्रकट किया है, जब तक अपहृत सीता का पता नहीं चला था। अन्यथा कोई आलोचक इसे सीता का पता मिलने पर उनसे मिलने की राम की व्याकुलता कह सकता था। ज्ञात हो कि सुन्दरकाण्ड में ही सीता का पता लगाकर हनुमान् जी लंका लौटते हैं।

हनुमान् जी जब सीता को खोजते हुए लङ्का में अशोकवाटिका में पहुँचते हैं, तो सीता के प्रथम दर्शन होने पर सोचते हैं—यही

भगवती सीता हैं, जिनके लिए राम करुणा, दया, शोक और प्रेम, इन चार प्रकार से सन्तप्त होते हैं। स्त्री खो गयी, इससे करुणा होती है। वह मेरी आश्रिता थी, इससे दया होती है, वह मेरी पत्नी है, इससे शोक होता है और वह मेरी प्रिया है, इससे प्रेमजन्य शोक होता है।—

स्त्री प्रणष्टेति कारुण्यादाश्रितेत्यानृशंस्यतः।
पत्नी नष्टेति शोकेन प्रियेति मदनेन च।।

(वाल्मीकिरामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग-१५, श्लोक-५०)

रावणवध प्रसङ्ग—और फिर वह सबसे महान् कार्य। सीता के लिए कुल सहित रावण का संहार। केवल विभीषण बचे, क्योंकि वे राम के पक्ष में आ गये थे। रावण के कुल में कोई दीपक जलाने वाला न रहा। असुर जाति के पुरुष लगभग समाप्त हो गये।

कल्पना कीजिए राम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण करके सीता के बिना अयोध्या लौट आते, तो क्या होता। कह देते कि सीता को राक्षस या पशु खा गये। प्रमाण मौजूद थे, जब प्रस्रवण पर्वत पर उन्होंने टूटा रथ आदि देखकर सीता के अपहरण होने के साथ-साथ भक्षण कर लिए जाने की आशङ्का भी जतायी थी। और फिर उन्होंने सीता की बहुत खोज भी कर ली थी।

तब क्या होता? बड़े शौक और धूमधाम से उनका दूसरा विवाह होता। पर क्या ऐसा हुआ? सीता के अपहरण के बाद उनका पता लगाने के लिए दिन-रात, आकाश-पाताल एक

कर दिया। अन्ततः पता लगाया। और अपहर्ता रावण को जो दण्ड दिया, वह पति-पत्नी के प्रेम का मानदण्ड बना हुआ है, आजतक। फिर कैसे माना जाय कि प्रजारञ्जन के नाम पर उन्होंने सीता का निर्वासन कर दिया?

अग्निपरीक्षा का सच

शायद इसे सुनकर सभी चौंक उठेंगे कि सीता की अग्निपरीक्षा राम और सीता के बीच के अगाध प्रेम की परिचायक है। पूरा प्रसङ्ग सुनना और समझना आवश्यक है।

रावण मारा जा चुका। राम ने विभीषण को कहा कि सीता को नहला-धुलाकर, स्वच्छ वस्त्र पहनाकर ले आओ।

विभीषण गये। उन्होंने सीताजी को नहा-धोकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर राम के समक्ष जाने का निवेदन किया। सीताजी ने कहा कि मैं बिना स्नान किये, अभी अपने पति के दर्शन करना चाहती हूँ। इस पर विभीषण ने कहा कि आपके पति ने आज्ञा दी है। तब सीताजी नहा-धोकर स्वच्छ वस्त्र और आभूषण पहनकर आयीं। तब विभीषण ने पालकी मँगवा दी। वे पालकी में बैठकर राम के समक्ष आयीं।

अब अधिक ध्यान से इस प्रसङ्ग को समझने की आवश्यकता है। सीता तो पति की आज्ञा स्वीकार करती हैं और नहा-धोकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर आती हैं। साथ ही पालकी पर बैठकर आती हैं। किन्तु राम को यहाँ से खिन्नता उत्पन्न होने लगती है। वे यह समझ जाते हैं कि यदि सीता का यही रूप सामने आया, तो संसार

यह समझेगा कि सीता को लंका में कोई कष्ट ही नहीं था। वह तो वहाँ बड़े सुख से थी और रानी की तरह पालकी में बैठकर आयी है। समाज इस के बारे में निश्चय की गलत ढंग से सोचेगा। इसलिए इसका प्रतिकार आवश्यक है।

यह जो राम के मन में चल रहे मंथन के बारे में कहा गया, इसका खुलासा सीता की अग्निपरीक्षा के उपरान्त, राम और अग्निदेव के संवाद में होता है।

अस्तु, अग्निपरीक्षा के समय राम के सुविज्ञ कूटनीतिज्ञ होने का अद्‌भुत प्रमाण मिलता है। वे सीता को कहते हैं कि यह युद्ध मैंने अपने कुल की कीर्ति की रक्षा के लिए किया था, तुम्हारे लिए नहीं। तुम्हारे लिए दसों दिशाएँ खुली हुई हैं, तुम कहीं भी जा सकती हो। चाहो तो भरत, लक्ष्मण या शत्रुघ्न में से किसी के पास रह सकती हो। और भी बहुत-सी बातें वे सीता को कहते हैं।

इस पर सीता अत्यन्त क्षुब्ध होती हैं और राम को फटकार लगाती हैं। वे राम को तुच्छ व्यक्ति के समान भाषा बोलने वाला तक कह डालती हैं। वे कहती हैं—मैं सामान्य स्त्री नहीं हूँ। भूमिजा अर्थात् भूमि से उत्पन्न हूँ। उनका तात्पर्य है कि उनकी गरिमा एवं पवित्रता भूमि की तरह ही है।

फिर वे लक्ष्मण को चिता तैयार करने के लिए कहती हैं। इस पर लक्ष्मण क्रोध से भर जाते हैं और क्रोध में ही राम को देखते हैं। परन्तु राम उनको संकेत करते हैं कि थोड़ी देर शान्त रहो। और मेरा

हार्दिक अभिप्राय क्या है, वह देखो। लक्ष्मण इसे समझ जाते हैं और चिता तैयार करने लगते हैं।—

एवमुक्तस्तु वैदेह्या लक्ष्मणः परवीरहा।
अमर्षवशमापन्नो राघवं समुदैक्षत।।
स विज्ञाय मनश्छन्दं रामस्याकारसूचितम्।
चितां चकार सौमित्रिर्मते रामस्य वीर्यवान्।।

(वाल्मीकिरामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग-१६, श्लोक-२०-२१)

तब सीताजी ने यह कहा कि यदि मैंने राम के प्रति अनन्य प्रेम किया हो और क्षणभर के लिए मेरा मन श्रीराम से दूर न हुआ हो, तो अग्निदेव मेरी रक्षा करें। ऐसा कहकर वे चिता में प्रवेश कर गयीं। वे नहीं जलीं। स्वयं अग्निदेव उनको लेकर प्रकट हुए। राम को कहा कि मिथिलेशनन्दिनी सर्वथा निष्पाप हैं। आप इसे सादर स्वीकार करें। मैं आज्ञा देता हूँ कि आप इसे कोई कठोर बात न कहें।

राम का वह हार्दिक अभिप्राय, जिसके लिए 'मनश्छन्द' शब्द का प्रयोग उन्होंने किया, वह क्या था? यह मनश्छन्द सीता के चिता में जाने से पहले उन्होंने लक्ष्मण को संकेत किया था। उसे वे अब प्रकट करते हैं। बड़े ही मार्मिक उद्‌गार हैं—

लोगों में सीता की पवित्रता का विश्वास दिलाने के लिए उसकी परीक्षा आवश्यक थी। मैं जानता हूँ कि जैसे सागर तट नहीं लाँघ सकता, उसी प्रकार अपने तेज से सुरक्षित सीता पर रावण अत्याचार नहीं कर सकता था।—

इमामपि विशालाक्षीं रक्षितां स्वेन तेजसा।
रावणो नातिवर्तेत वेलामिव महोदधिः।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-११८, श्लोक-१६)

सीता मुझसे उसी तरह अभिन्न है, जैसे सूर्य और उसकी प्रभा। मिथिलेशकुमारी प्रज्वलित दीपशिखा के समान दूसरों के लिए अलभ्य और दुर्धर्ष है। रावण मन से भी इन पर अनाचार नहीं कर सकता था। पर संसार को सीता की शुद्धि नहीं दिखाता, तो मुझे मूर्ख समझा जाता और इनको अशुद्ध। इसलिए जब सीता अग्निपरीक्षा दे रही थीं, तब मैंने इनको रोका नहीं। जनकात्मजा मैथिली तीनों लोकों में परम पवित्र है। जैसे मनस्वी मनुष्य अपनी कीर्ति का त्याग नहीं करता, वैसे ही मैं भी सीता का त्याग नहीं कर सकता। —

विशुद्धा त्रिषु लोकेषु मैथिली जनकात्मजा।
न विहातुं मया शक्या कीर्तिरात्मवता यथा।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-११२, श्लोक-२०)

इस प्रकार हम देखते हैं कि अग्निपरीक्षा देने का निर्णय सीता का अपना निर्णय था। राम ने अत्यन्त बुद्धिमत्ता से यह सिद्ध किया कि सीता पूर्णतः पवित्र और निष्कलुष है। साथ ही यह कि वे सीता को किसी रूप में छोड़ नहीं सकते। यदि 'मनश्छन्द' का यह श्लोक अग्निपरीक्षा से पहले न होता, तो यह समझा जा सकता था कि राम अपनी झेंप मिटाने के लिए ये सब बातें बोल रहे हैं। पर पहले 'मनश्छन्द' का संकेत देकर उन्होंने यह

सिद्ध किया कि सीता की शुद्धि दिखाना, उनकी पूरी योजना थी। यह राम का सीता के प्रति अगाध प्रेम को नहीं दर्शाता, तो क्या दर्शाता है?

राम द्वारा सीता का निर्वासन कहीं से भी सिद्ध नहीं होता

अभी तक हमने यह देखा कि राम सीता को कितना प्रेम करते हैं। अब आते हैं सीता निर्वासन पर।

पुनः अहल्या प्रसङ्ग

अब बालकाण्ड का एक उदाहरण याद करें—अहल्या का उद्धार। अहल्या–महर्षि गौतम की पत्नी। उनके साथ इन्द्र ने गौतम वेश धरकर समागम किया। पति के शाप से वह राख में पड़ी हुई सबके लिए अदृश्य हो गयीं। राम के द्वारा उनके आश्रम में पधारने पर वे शापमुक्त हुईं। सबको दिखायी देने लगीं। राम ने उनके चरण-स्पर्श किये।

यह प्रतीकात्मक कथा है। वस्तुतः अहल्या समाज-व्यवस्था से दूर कर दी गयी थीं। यही उनका अदृश्य कर दिया जाना है। राम उनको समाज-व्यवस्था में पुनः लेकर आये। अहल्या ने घोर तपस्या करके अपना प्रायश्चित्त किया है। अब वे शुद्ध हैं। उनको समाज में पुनः स्थान मिला। यही अहल्या का पुनः दृश्य होना है।

जो इस अहल्या प्रसङ्ग में बराबर का दोषी था, वह इन्द्र थोड़ी सजा पाकर ही मुक्त हो गया। बल्कि पुनः स्वर्ग का राजा बन गया। राम ने अहल्या का उद्धार करके यह बताया कि यदि पुरुष सजा पाकर शुद्ध हो सकता है, तो स्त्री भी सजा पाकर शुद्ध हो

सकती हैं। और प्रायश्चित्त तो उसको और गरिमामय बनाता है। अहल्या आज प्रातः स्मरणीया महिला हैं।

तब राम अहल्या का पुनर्वासन करने वाले सिद्ध होते हैं।

अब देखें कि राम ने अहल्या का तो उद्धार कर दिया, जिन पर परपुरुष समागम का आरोप सिद्ध था, किन्तु अपनी पत्नी सीता को निर्वासन दे दिया, जो अग्निपरीक्षा में अपनी शुद्धि को प्रमाणित कर चुकी थीं। इतना बड़ा विरोधी भाव कहीं से किसी को सही लग सकता है ! ऊपर से वह सीता जिनको वे इतना प्रेम करते थे।

पुनः रुमा प्रसङ्ग–सुग्रीव की पत्नी रुमा को वाली ने बलपूर्वक अपने पास रख लिया था और बलात् उसका उपभोग किया। राम ने इस कारण वाली का वध किया। सुग्रीव ने राम के ही कारण पुनः अपनी पत्नी रुमा प्राप्त की। उसे स्वीकार किया जो राम की उपस्थिति में हुआ। स्पष्ट है कि राम ने इस पुनीत कार्य में अपनी सहमति दी।

तब राम ने अपनी तीनों लोकों में परम पवित्र पत्नी सीता का निर्वासन कर दिया, यह किसे स्वीकार हो सकता है?

लोकाराधन की झूठी दुहाई–जिस लोकाराधन की दुहाई देकर राम द्वारा सीता के निर्वासन को सही ठहराया जाने का प्रयास किया जाता है, क्या वह लोकाराधन या प्रजा को प्रसन्न रखना ही राम का सर्वोपरि अभीष्ट था। कदापि नहीं। राम का अभीष्ट था–सत्यधर्म की रक्षा करना।

यदि लोकाराधन ही राम का सर्वोपरि अभीष्ट होता, तो वनवास के समय सारी अयोध्या ही उनको वन जाने से रोक रही थी। पुनः भरतजी के साथ भी सारे अध्योध्यावासी उनको वापस लौटाने के लिए गये थे। तब राम लोकाराधन के नाम पर क्यों नहीं लौटे?

क्योंकि उन्होंने देखा कि मेरे पिता ने मेरी मध्यम माता कैकेयी को दो वचन दिये थे। अब मेरे वनवास के नाम पर पुत्रमोह में वे अपने वचन से पीछे हट रहे हैं। रघुकुल की कीर्ति कलंकित हो जाएगी। पिता के वचन को पूरा करना पुत्र का कर्तव्य है। इसलिए मेरा वनवास में जाना आवश्यक है। इसीलिए अयोध्या के निवासियों के द्वारा लाख मनाये जाने पर भी टस से मस नहीं हुए। उन्होंने सत्यधर्म की रक्षा की ओर वनवास को अपनाया।—

स याच्यमानः काकुत्स्थस्ताभिः प्रकृतिभिस्तदा।
कुर्वाणः पितरं सत्यं वनमेवान्वपद्यत।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-४५, श्लोक-४)

सीता निर्वासन के प्रसङ्ग में भी यह याद रखना होगा कि राम सत्यधर्म का ही अनुसरण करेंगे। लोकाराधन की दुहाई नहीं। सीता अग्निपरीक्षा देकर अपनी शुद्धि प्रमाणित कर चुकी हैं। इस सत्यधर्म की रक्षा करेंगे राम। इसलिए अब लोक के द्वारा किसी भी अपवाद का कोई अर्थ नहीं है।

अतः यह कैसे माना जाय कि राम ने सीता का निर्वासन कर दिया?

कैसी मर्यादा—और फिर इस सीता निर्वासन से कौन-सी मर्यादा स्थापित होती? राजा यदि प्रजा के किसी व्यक्ति के कहने मात्र से निर्णय लेने लग जाय, तो सारे विधि-विधान का क्या होगा? फिर आकर कोई कह दे कि लक्ष्मण चोर है, भरत शराबी है, शत्रुघ्न निरंकुश है, तो क्या राम उनको भी निर्वासित करेंगे? ऐसे तो कानून-व्यवस्था समाप्त हो जाएगी। सारा राज्य ही खाली हो जाएगा, क्योंकि हर व्यक्ति के बारे में कोई न कोई अपवाद तो रहता ही है, फिर तो हरेक को ही निकालना पड़ेगा।

राम दोहरी बात नहीं करते

राम का सबसे बड़ा गुण माना गया है—रामो द्विर्नाभिभाषते। अर्थात् राम कभी दोहरी बात नहीं करते। तो अहल्या का उद्धार करने वाले, रुमा को पति सुग्रीव से मिलाने वाले, सत्यधर्म की रक्षा के लिए लोगों का आग्रह ठुकराकर वनवास से अयोध्या न जाने वाले, सीता की अग्निपरीक्षा से उनकी शुद्धि को स्वीकार करने वाले, मनस्वी व्यक्ति जिस प्रकार अपनी कीर्ति को नहीं छोड़ता, ऐसे ही मैं सीता को नहीं छोड़ूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा करने वाले, ऐसे राम लोगों के कहने से सीता को वन में कैसे निर्वासित कर सकते हैं!

फिर भी कतिपय पण्डितमानी जन इस बात को यों रखते हैं कि मनुष्य कई आयामों में व्यवहार कर सकता है। हो सकता है कि बाद में राम की सीता के प्रति मानसिकता बदल गयी हो। किसी विकट दबाव में उन्हें सीता का परित्याग करना पड़ गया हो।

तो इसका पूर्ण खण्डन करने वाला प्रत्युत्तर भी प्रस्तुत है।

उत्तरकाण्ड की मीमांसा

राम द्वारा सीता के निर्वासन की कथा वाल्मीकिरामायण के उत्तरकाण्ड में आती है। उत्तरकाण्ड में पूर्व के काण्डों के सापेक्ष बड़े-बड़े विरोधी कथोपकथन, विचार और भाव हैं, जो यह बताते हैं कि पूर्व के काण्डों और उत्तरकाण्ड में कोई तारतम्य नहीं है। यह कोई अलग ही ग्रन्थ है, इसका कवि अलग है और इसे बहुत बाद में चालाकी से जोड़ा गया है। इसे बिन्दुवार देखना होगा।

भाषा एवं कथन शैली

उत्तरकाण्ड की भाषा एवं कथन शैली किसी भी दृष्टि से पूर्व के छह काण्डों से मेल नहीं खाती। बालकाण्ड का कुछ हिस्सा भी अयोध्याकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक की भाषा और कथन शैली से मेल नहीं खाता। कहाँ वाल्मीकि की वह सुगुम्फित, सुशृंखलित और प्रवाहमयी भाषा, उसकी शब्दावली, उसकी संरचना, संवाद, कथा का तारतम्य और कहाँ उत्तरकाण्ड की शिथिल, बोझिल, बिखरी हुई भाषा और बेतरतीब कथा। उत्तरकाण्ड की शैली महाकाव्य की न होकर पुराण की शैली है। पुराण पचासों कथाओं का संग्रह होता है। उसमें एक सर्ग में यदि राजा का वर्णन है, तो अगले सर्ग में श्राद्ध माहात्म्य, उसके अगले सर्ग में पाताल लोक का वर्णन और उसके अगले सर्ग में प्रलय की कथा मिल सकती है। जबकि महाकाव्य में नायक होता है, नायिका होती है और कथा उनके साथ-साथ आगे बढ़ती है।

उत्तरकाण्ड में रावण की कथा बत्तीस सर्गों में है। फिर वसिष्ठ, हनुमान्, भृगु, विष्णु, नृग, निमि, उर्वशी-पुरूरवा, ययाति, शुक्राचार्य, यदु, पुरु, श्वेत आदि की बिना सन्दर्भ की कथाएँ हैं। इसी में इन्द्र-वृत्रासुर, इल-इला, बुध आदि के साथ-साथ इक्ष्वाकुकुल आदि का भी कथात्मक वर्णन है। राम और सीता के चरित्र इस में हैं तो सही, पर वे महाकाव्य की-सी प्रधानता लिए हुए नहीं हैं। साफ लगता है कि उत्तरकाण्ड में पुराणों की शैली है। सम्भव है कि यह कोई उपपुराण रहा हो और बाद में वाल्मीकिरामायण में जोड़ दिया गया हो।

इसकी सम्भावना यों भी बनती है कि महाभारत से जुड़ा एक उपपुराण है, जिसका नाम है—हरिवंश पुराण। हो सकता है कि उत्तरकाण्ड भी ऐसा ही उपपुराण रहा हो।

इतना स्पष्ट है कि भाषा एवं कथनशैली के आधार पर यह वाल्मीकि की रचना नहीं है। जो वाल्मीकिरामायण पढ़ेंगे, वे इसको साफ अनुभव कर सकते हैं। केवल बोलकर या लिखकर इसको पूरा नहीं समझाया जा सकता।

उदाहरण के लिए यदि कोई राम के वनवासगमन के समय माता कौसल्या द्वारा राम की रक्षा के लिए कहे गये स्वस्तिवाचन अथवा भरत के द्वारा अपनी निर्दोषिता को बताने वाले वचन या पम्पासरोवर व वसन्त ऋतु का वर्णन या सुन्दरकाण्ड में सीता-हनुमान् संवाद को ही पढ़ ले, तो उसे यह समझ आ जाएगा कि आदिकवि महर्षि वाल्मीकि कितनी उच्चकोटि के कवि हैं। सच तो यह है कि वाल्मीकि जैसा कोई

कवि संस्कृत साहित्य में मिलना दुर्लभ है। पर उत्तरकाण्ड पढ़ते ही वह उच्चता धराशायी हो जाती है। साफ दिखने लगता है कि यह वाल्मीकि की रचना है ही नहीं।

नारद द्वारा कही गयी कथा

बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में नारदजी वाल्मीकि को पूरी रामकथा सुनाते हैं। सौ श्लोकों में कही गयी इस पूरी कथा में कहीं भी सीता निर्वासन या शम्बूक वध का संकेतभर नहीं है।

किन्तु बालकाण्ड के तृतीय सर्ग में बताया गया है कि वाल्मीकि ने राम के जीवन का जो अनागत अर्थात् भविष्य था उसे उत्तरकाण्ड के रूप में लिखा। इस में उनके द्वारा प्रजा का रञ्जन था और वैदेही का परित्याग था।—

स्वराष्ट्ररञ्जनं च वैदेह्याश्च विसर्जनम्।
अनागतं च यत्किञ्चिद् रामस्य वसुधातले।
तच्चकारोत्तरे काव्ये वाल्मीकिर्भगवानृषिः।।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-३, श्लोक-३८-३९)

पुनः वहीं चतुर्थ सर्ग में कहा गया है कि वाल्मीकि ने चौबीस हजार श्लोक, पाँच सौ सर्ग तथा सात काण्डों में रामायण को लिखा। इसमें भविष्य सहित उत्तरकाण्ड भी था।

कृत्वा तु तन्महाप्राज्ञः सभविष्यं सहोत्तरम्।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-४, श्लोक-३)

ऐसा कैसे हुआ कि बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में नारद ने जो कथा वाल्मीकि को बतायी, उसमें न शम्बूक वध है और न सीता

का निर्वासन। नारदजी ने रामराज्य का वर्णन करने के बाद इस कथा का माहात्म्य बताते हुए कथा समाप्त कर दी है। बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में ब्रह्माजी ने भी वाल्मीकि को यही निर्देश दिया है कि नारद से जो रामकथा तुमने सुनी है, उसी चरित्र का तुम वर्णन करो।

वृत्तं कथय धीरस्य यथा ते नारदाच्छ्रुतम्।
रहस्यं च प्रकाशं च यद्वृत्तं तस्य धीमतः।।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-२, श्लोक-३३)

फिर बालकाण्ड के तृतीय सर्ग में राम के अनागत अर्थात् भविष्य के चरित्र की कथा कहाँ से आ गयी? यदि यह सीता-निर्वासन और शम्बूक-वध से युक्त उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की करुणा से जोड़े गये, तो यह समझ में न आने वाली बात है कि क्या नारदजी और ब्रह्माजी को यह कथा ज्ञात नहीं थी। सर्वज्ञ नारद और सर्वज्ञ ब्रह्माजी ने इन कथाओं को छुपाने का प्रयास किया था, जिनको वाल्मीकि ने उघाड़ दिया। या यह नारदजी या ब्रह्माजी का षड्यन्त्र था, राम के विरुद्ध कि थोड़ी कथा वाल्मीकि को बता दो, शेष वह स्वयं पता कर लेगा।

सुधीजन स्वयं विचार करें। स्पष्ट दिखता है कि जिस कवि ने उत्तरकाण्ड लिखा, उसी ने विचारपूर्वक बालकाण्ड का तृतीय और चतुर्थ सर्ग लिखा ताकि उत्तरकाण्ड की वैधता ठहरायी जा सके।

पर यहाँ वह कवि एक बड़ी चूक कर गया। बालकाण्ड के तृतीय सर्ग में लिखा है कि वाल्मीकि ने सारी रामकथा को अपने योगबल से देखा।

तत् सर्वं धर्मवीर्येण यथावत् सम्प्रपश्यति।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-३, श्लोक-४)

इसकी आवश्यकता ही नहीं थी। सीता तो कथित निर्वासित होकर वाल्मीकि के आश्रम में ही रह रही थी। सारी कथा सीता से जानी जा सकती थी। उत्तरकाण्ड में बताया गया है कि वाल्मीकि के आश्रम में शत्रुघ्न भी आये थे। सबसे अन्त में राम भी आये। तो उन सबसे भी पूरी कथा पूछी जा सकती थी।

और उत्तरकाण्ड की वे समस्त, घटनाएँ जो उनके समक्ष घटी थीं, उनको योगबल से देखने का कोई औचित्य समझ में नहीं आता।

पहले ही कहा जा चुका है कि बालकाण्ड के भी बहुत से हिस्से प्रक्षिप्त हैं। उनमें से सर्ग-तीन और चार भी प्रक्षिप्त सिद्ध होते हैं। और चूँकि बालकाण्ड के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग में नारद एवं ब्रह्माजी ने शम्बूक-वध एवं सीता-निर्वासन की कोई चर्चा नहीं की है, अतः उत्तरकाण्ड जिसमें सीता-निर्वासन और शम्बूक-वध है, वह भी प्रक्षिप्त ही है, ऐसा निश्चित मत है।

सम्भावना और उसका निरसन

एक सम्भावना यह मानी जा सकती है कि नारदजी ने जहाँ तक वाल्मीकि को कथा सुनायी, वहाँ तक तो राम का वर्तमान है। आगे की कथा वाल्मीकि ने अपने योगबल से देखी। 'सभविष्यं सहोत्तरम्' का अर्थ भविष्य में होने वाले उत्तरकाण्ड लेने पर यह सम्भावना ठीक बैठती है। जनता का बहुत बड़ा

हिस्सा यह मानता है कि वाल्मीकि ने पहले रामायण लिख दी। बाद में यह रामकथा घटी। और किसी काण्ड पर यह बात लागू नहीं की जा सकती क्योंकि वे काण्ड तो नारद द्वारा सुनाये गये हैं किन्तु उत्तरकाण्ड नारद द्वारा सुनाया नहीं गया है। तो यह माना जाय कि इसे योगबल द्वारा वाल्मीकि ने देखकर पहले लिख लिया। उत्तरकाण्ड बाद में घटा।

पर यहाँ यह याद रखना होगा कि नारद द्वारा बतायी गयी कथा में प्रभु राम द्वारा परमधाम गमन तक का वर्णन है। उसमें भी नारद ने भविष्य की ही बात की है। वे कहते हैं—ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य करने के अनन्तर श्रीराम ब्रह्मलोक जाएँगे—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-९७)

जो नारद यह देख रहे थे कि राम ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य पर शासन करेंगे, वे भविष्य में होने वाले सीता का कथित निर्वासन नहीं देख पाये, आश्चर्य है!

इसके साथ ही विशेष ध्यातव्य यह है कि वाल्मीकि ने युद्धकाण्ड में राम और सीता द्वारा प्रभूत दान का वर्णन किया है। पुनः राम द्वारा लक्ष्मण को युवराज बनने का आग्रह, लक्ष्मण द्वारा मना किये जाने पर भरत को युवराज बनाना एवं भाइयों सहित ग्यारह हजार वर्षों तक अयोध्या का शासन करना बताया है।—

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।
भ्रातृभि सहितः श्रीमान् रामो राज्यमकारयत्।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-१०६)

इसके बाद वे ग्रन्थ का माहात्म्य एवं फलश्रुति बताकर युद्धकाण्ड को पूरा कर देते हैं। इसमें वे कहीं भी सीता निर्वासन का कोई संकेत तक नहीं देते। फिर सीता निर्वासन कहाँ से आ गया।

उत्तरकाण्ड की पुनः जाँच

पुनः उत्तरकाण्ड पर ध्यान केन्द्रित करके उन प्रमाणों को जाना जाय, जो यह सिद्ध करते हैं कि उत्तरकाण्ड महर्षि आदिकवि वाल्मीकि की रचना ही नहीं है। यह किसी अन्य कवि की रचना है, जिसे हजारों वर्ष बाद में लिखा गया और चालाकी से वाल्मीकिरामायण में जोड़ दिया गया।

उत्तरकाण्ड के प्रथम सर्ग में ही राम के दरबार में कौशिक, यवक्रीत, गार्ग्य, गालव, कण्व, स्वस्ति, नमुचि, प्रमुचि, अगस्त्य, अत्रि, सुमुख, विमुख, नृषङ्ग, कवष, धौम्य, कौशेय, वसिष्ठ, कश्यप, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि एवं भरद्वाज ऋषि आते हैं। पहले तो वे श्रीराम को बहुत पराक्रमी बताते हैं कि उन्होंने प्रहस्त, विकटाक्ष, विरूपाक्ष, महोदर, दुर्धर्ष, अकम्पन, कुम्भकर्ण और रावण जैसे राक्षसों को मारकर, सभी लोकों को सुरक्षित कर दिया, किन्तु अचानक कहते हैं कि रावण को मारना कोई बड़ी बात नहीं, अपितु लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का मारा जाना बड़ी बात है।—

संख्ये तस्य न किञ्चित्तु रावणस्य पराभवः।
द्वन्द्वयुद्धमनुप्राप्तो दिष्ट्या ते रावणिर्हतः।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-२८)

रामचन्द्रजी विस्मित हो जाते हैं कि ऐसा क्या था मेघनाद में कि उसे मारना रावण को मारने से बड़ी बात हो गयी।

यह विस्मय वाल्मीकिरामायण के अध्येता को भी होगा। वाल्मीकि ने रावण के वध को ही युद्ध की अन्तिम परिणति बताया है। कुम्भकर्ण को लङ्का का सबसे भयानक योद्धा मानने का भी उन्होंने संकेत दिया है। फिर मेघनाद को अचानक ही सबसे वीर मानने का कारण?

उत्तरकाण्ड में इसका कोई उत्तर नहीं मिलता। बदले में ऋषि रावण की कथा सुनाने लगते हैं। पूरे बत्तीस सर्गों में रावण की कथा चलती है। मेघनाद का एक छोटा-सा प्रसङ्ग अवश्य आता है, जहाँ उसने यज्ञ से दिव्यास्त्र प्राप्त किये हैं और इन्द्र को पराजित किया है। पर ऐसे ही वरदानों से तो रावण भी बलशाली व अजेय बना था। तो मेघनाद के प्रसंग में ऐसा विशेष क्या है?

इसमें विशेष कुछ नहीं है। बल्कि यह एक प्रकार का षड्यन्त्र है। बहुत से अन्य पन्थों-सम्प्रदायों की रामायणों में लक्ष्मण के द्वारा ही रावण का वध बताया गया है। यानी लक्ष्मण को राम के समानान्तर या उनसे बड़ा पराक्रमी योद्धा बताने का लम्बा प्रक्रम चला है। राम के शौर्य एवं वाल्मीकि की कवित्वशक्ति को सहन न करने के कारण किसी ईर्ष्यालु कवि ने ही ऐसी रचना

की है, जिसमें लक्ष्मण को एकबार पुनः अधिक पराक्रमी बताने का हास्यास्पद प्रयास किया है। इन अन्य पन्थ-सम्प्रदायों की रामायणों में तो राम कुष्ठ के रोगी तक हैं और सीता राम की बहिन तक है। फिर इस उत्तरकाण्ड में सीता का निर्वासन करा दिया गया, तो कौन-सी बड़ी बात!

विपर्यय—वाल्मीकिरामायण में उत्तरकाण्ड से पहले युद्धकाण्ड है। उसके अन्तिम भाग में राम का अयोध्या लौटकर सिंहासन पर बैठना और पुनः राज्य सम्भालना है। वानरों, विभीषण आदि की विदाई है। रामराज्य का वर्णन और ग्रन्थ का माहात्म्य बताया गया है।

उत्तरकाण्ड से पहले युद्धकाण्ड में सभी वानरों की विदाई बतायी जा चुकी है। पर उत्तरकाण्ड में बहुत से वानर जैसे सुग्रीव, अङ्गद, हनुमान्, जाम्बवान् (रीछ), सुषेण, तार, नील, नल, मैन्द, द्विविद, कुमुद, शरभ, शतबलि, गन्धमादन, गज, गवाक्ष, गवय, धूम्र, रम्भ तथा ज्योतिमुख राम के दरबार में बैठे हुए हैं। वहाँ भी उनकी विदाई बतायी जाती है।

जाहिर है कि उत्तरकाण्ड युद्धकाण्ड से आगे की कड़ी नहीं है। कड़ी होता, तो ये वानर राम के दरबार में कैसे बैठे होते। युद्धकाण्ड में स्पष्ट लिखा है कि विभीषण और सुग्रीव सहित सभी वानर राम से सत्कृत होकर अपने-अपने स्थान में चले गये। उन्होंने राम का राज्याभिषेक देखकर उनसे विदा लेकर किष्किन्धा को प्रस्थान किया।—

दृष्ट्वा सर्वे महात्मानस्ततस्ते वानरर्षभाः।
विसृष्टा पार्थिवेन्द्रेण किष्किन्धां समुपागमन्।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-८८)

फिर उत्तरकाण्ड में उनकी पुनः विदाई का प्रसङ्ग कहाँ से आया? यह तभी हो सकता है, जब उत्तरकाण्ड अन्य कवि के द्वारा लिखा गया हो।

हिन्दू संस्कृति के प्रायः सभी धार्मिक ग्रन्थों में अन्त में ग्रन्थ का माहात्म्य लिखा होता है। जिस रामराज्य का वर्णन आज आदर्श राज्य के रूप में किया जाता है, उसका वर्णन वाल्मीकि ने युद्धकाण्ड के १२८वें सर्ग में कर दिया है। साथ ही ग्रन्थ का माहात्म्य इसके १०७वें श्लोक से १२५वें श्लोक तक किया है।

युद्धकाण्ड में वे कहते हैं—

यह ऋषिप्रोक्त आदिकाव्य रामायण हैं, जिसे पूर्वकाल में महर्षि वाल्मीकि ने रचा था। यह धर्म, यश तथा आयु की वृद्धि करने वाला है। राजाओं को विजय दिलाने वाला है। संसार में जो मानव सदा इसका सेवन करता है, वह पापमुक्त हो जाता है।

धर्म्यं यशस्यमायुष्यं राज्ञां च विजयावहम्।
यः शृणोति सदा लोके नरः पापात् प्रमुच्यते।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-१०७ व १०८)

युद्धकाण्ड के अन्तिम इस १२८वें सर्ग का अन्तिम श्लोक इस प्रकार है—

आयुष्यमारोग्यकरं यशस्यं
सौभ्रातृकं बुद्धिकरं शुभं च।
श्रोतव्यमेतन्नियमेन सद्भि-
राख्यानमोजस्करमृद्धिकामैः।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-१२५)

अर्थात् यह काव्य आयु, आरोग्य, यश और भ्रातृप्रेम को बढ़ाने वाला है। यह उत्तम बुद्धि प्रदान करने वाला और मंगलकारी है। अतः समृद्धि की इच्छा रखने वाले सत्पुरुष को इस उत्साहवर्धक आख्यान का नियमपूर्वक श्रवण करना चाहिए।

हिन्दू संस्कृति के पावन ग्रन्थों में इसका समापन ग्रन्थमाहात्म्य से करने की परम्परा वाल्मीकि से ही चली, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है क्योंकि वाल्मीकि आदिकवि हैं। युद्धकाण्ड में साफ लगता है कि महाकाव्य पूर्ण हो गया। तो फिर उत्तरकाण्ड कहाँ से आया? उत्तर है कि उत्तरकाण्ड बाद में लिखा गया और वाल्मीकिरामायण में जोड़ा गया।

बड़ी विसंगति–उत्तरकाण्ड की एक बड़ी विसंगति देखें। कथित रूप से निर्वासित होकर सीता वाल्मीकि के आश्रम में रह रही है। शत्रुघ्न लवणासुर का वध करने मधुपुर जा रहे हैं। मार्ग में वे वाल्मीकि के आश्रम में ठहरते हैं। उसी रात्रि में सीता दो पुत्रों को जन्म देती हैं। उनके नाम कुश और लव रखे जाते हैं। शत्रुघ्न को यह समाचार मिलता है, तो वे सीता की पर्णशाला में जाते हैं और कहते हैं—माताजी! यह तो बड़े सौभाग्य की बात है।—

अर्धरात्रे तु शत्रुघ्नः शुश्राव सुमहत् प्रियम्।
पर्णशालां ततो गत्वा मातर्दिष्ट्येति चाब्रवीत्।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-६६, श्लोक-१२)

फिर वे चले जाते हैं। इस पूरे प्रसंग में कवि का क्या उद्देश्य है, यह समझ में नहीं आता।

शत्रुघ्न लवणासुर का वध करके मधुरा नगरी को बसाकर अपना राज्य स्थापित करते हैं। वे बारह वर्षों बाद अयोध्या लौट रहे होते हैं, तो वाल्मीकि के आश्रम में रुकते हैं। कुश-लव बड़े हो चुके हैं। वे दोनों रामायण का गान करते हैं। शत्रुघ्न को सुनकर आश्चर्य होता है। सैनिक शत्रुघ्न को कहते हैं कि उनको पता करना चाहिए कि ये रामायण कौन गा रहे हैं। तब शत्रुघ्न उनको कहते हैं कि मुनियों के आश्रम में ऐसे कौतूहल होते रहते हैं। उनसे कुछ पूछताछ करना हमारे लिए उचित नहीं है।—

सैनिकानक्षमोऽस्माकं परिप्रष्टुमिहेदृशः।
आश्चर्याणि बहूनीह भवन्त्याश्रमे पुनः।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-७१, श्लोक-२३)

और फिर शत्रुघ्न अयोध्या के लिए चले जाते हैं। वे वहाँ सात दिन ठहरते हैं, पर न कुश-लव के जन्म की चर्चा करते हैं और न रामकथा के गान की।

तो प्रश्न यह उठता है कि तब शत्रुघ्न के वाल्मीकि के आश्रम में आने की कथा के वर्णन की आवश्यकता ही क्या थी। उत्तरकाण्ड का कवि आखिर कुश-लव की पहचान क्यों छुपाना चाह रहा है। उत्तरकाण्ड के अनुसार ये कुश-लव राम

दरबार में रामायण का गान करते हैं। कोई उनको नहीं पहचानता। वे अपना परिचय स्वयं देते हैं। यदि कवि का यही उद्देश्य था, तो वह तो शत्रुघ्न द्वारा वाल्मीकि के आश्रम पर जाने की कथा को न लिखकर अधिक तर्कसंगत ढंग से कहा जा सकता था। शत्रुघ्न का वाल्मीकि के आश्रम पर जाकर कुश-लव के जन्म को जानकर बारह वर्षों तक श्रीराम को खबर न भिजवाना, फिर वाल्मीकि आश्रम में रामकथा के गायकों से मिले बिना वहाँ से निकल जाना, सभी संयोग की बातें नहीं हो सकतीं। इस कवि ने जानबूझकर ऐसा किया है ताकि कुश-लव की पहचान राम के सामने पहले ही न प्रकट हो जाय। कथा को चमत्कारी बनाने के लिए कवि ने कितना बड़ा अनर्थ कर डाला है।

पुष्पक विमान प्रसंग–रावण के पास जो पुष्पक विमान था, वह वस्तुतः कुबेर का था, जिसे रावण ने छीन लिया था। रावण के मरने के बाद राम उसी पुष्पक विमान पर बैठकर सीता, लक्ष्मण व अन्य वानर-भालुओं के साथ अयोध्या आये थे।

सुन्दरकाण्ड में वर्णन है कि हनुमान् सीता को खोजने के क्रम में जब लङ्का जाते हैं, तब उस पुष्पक विमान को देखकर आश्चर्यचकित होते हैं और उसे दो बार अच्छे प्रकार देखते हैं।

अस्तु, राम अयोध्या की सीमा पर पहुँचकर जब सीता, लक्ष्मण व अन्य सहित पुष्पक विमान से उतरते हैं, तब पुष्पक विमान को वापस जाने का आदेश देते हैं। वह पुष्पक विमान अपने वास्तविक स्वामी कुबेर के पास चला जाता है। यह सारा वर्णन युद्धकाण्ड में है।

किन्तु वही पुष्पक विमान उत्तरकाण्ड में राम के पास लौट आता है और कहता है कि कुबेर ने मुझे आपके पास भेज दिया है। यह कहकर कि आपने मुझे जीत लिया है, अतः अब मैं आपके स्वामित्व में रहूँ। श्रीराम उसे स्वीकार कर लेते हैं और उसे कहते हैं कि तुम आकाश में अदृश्य होकर रहो। मैं जब बुलाऊँ, तब आ जाना।

उत्तरकाण्ड में यह बहुत बड़ा विरोधाभास है। संसार के इतिहास में राम जैसा निःस्पृह व्यक्ति मिलना कठिन है। पहले भरत के लिए स्वयं का राज्य त्यागा। निषादराज गुह ने उनको अपना राज्य देना चाहा, उसको स्वीकार नहीं किया। वाली को मारने के बाद सुग्रीव ने किष्किन्धा का राज्य उनको देना चाहा, उन्होंने नहीं लिया। रावण का वध करके विभीषण को लङ्का के राज-सिंहासन पर बिठा दिया। कुबेर का विमान कुबेर को लौटा दिया।

यही नहीं अरण्यकाण्ड में पंचम सर्ग में वर्णन है कि शरभङ्ग ऋषि ने अपनी तपस्या से जिन अक्षय शुभलोकों पर विजय पायी थी, वे लोक वे श्रीराम को समर्पित करना चाहते थे। श्रीराम ने मना कर दिया और कहा कि इन लोकों को वे स्वयं प्राप्त करेंगे।

इसके आगे सप्तम सर्ग में सुतीक्ष्ण ऋषि ने भी यही प्रस्ताव दिया। कहा कि मेरी तपस्या से प्राप्त देवर्षिसेवित लोकों में आप सीता और लक्ष्मण के साथ विहार करें।—

तेषु देवर्षिजुष्टेषु जितेषु तपसा मया।
मत्प्रसादात् सभार्यस्त्वं विहरस्व सलक्ष्मणः।।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-७, श्लोक-१२)

राम पुनः वही उत्तर देते हैं कि इन लोकों को मैं स्वयं प्राप्त करूँगा। आप तो मुझे इस अरण्य में रहने का वह स्थान बताएँ, जहाँ मैं अपना आवास बना सकूँ।—

अहमेवाहरिष्यामि स्वयं लोकान् महामुने।
आवासं त्वहमिच्छामि प्रदिष्टमिह काननेे।।

(वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग-७, श्लोक-१४)

ऐसे राम पुष्पक विमान को बिना ना-नुकुर के स्वीकार कर लेते हैं। क्या यह उत्तरकाण्ड में उनके चरित्र का विरोधाभास नहीं है? क्या एक ही कवि वाल्मीकि राम के दो परस्पर इतने विरोधी चरित्र दिखा सकते हैं? इससे क्या वे स्वयं झूठे सिद्ध नहीं हो जाते हैं? उत्तर है कि ऐसा है ही नहीं। उत्तरकाण्ड उनकी रचना ही नहीं है।

सबसे बड़ी विसंगति–उत्तरकाण्ड में पूर्व के छह काण्डों के सापेक्ष कई विसंगतियाँ भरी पड़ी हैं। कइयों का वर्णन किया जा चुका। अब आते हैं सबसे बड़ी विसंगति पर, जो उत्तरकाण्ड वाल्मीकि के द्वारा नहीं रचा गया है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। पर इसको कहने व लिखने से पहले कान को हाथ लगाकर माता सीता और भगवान् राम से क्षमा माँगना अत्यावश्यक है। साथ ही 'शिवशम्भो' का उच्चारण करना पवित्र अनिवार्यता है।

युद्धकाण्ड में रावण का एक पार्षद महापार्श्व रावण को उकसाता है कि वह तो राजा है, वह सीता के पास बार-बार निवेदन करने क्यों जाता है। उसे बलपूर्वक सीता से समागम करना चाहिए।

रावण उत्तर देता है कि वह ऐसा नहीं कर सकता। एक बार उसने पुञ्जिकस्थला नाम की अप्सरा से बलात्कार किया था। वह रोती हुई ब्रह्माजी के पास गयी थी। तब ब्रह्माजी ने रावण को शाप दिया था कि आज के बाद तुमने किसी दूसरी नारी के साथ बलपूर्वक समागम किया, तो तुम्हारे सिर के सौ टुकड़े हो जाएँगे।—

अद्यप्रभृति यामन्यां बलान्नारीं गमिष्यसि।
तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१३, श्लोक-१४)

ऐसी ही कथा उत्तरकाण्ड में है, पर पात्र अलग-अलग हैं। उसमें रावण द्वारा रम्भा नामक अप्सरा का बलात्कार बताया गया है। वह कुबेर के पुत्र नलकूबर की होनेवाली पत्नी थी। तब नलकूबर ने रावण को शाप दिया कि यदि वह रावण कामार्त होकर उसको न चाहने वाली स्त्री से बलपूर्वक समागम करेगा, तो उसके मस्तक के सात टुकड़े हो जाएँगे।—

यदा ह्यकामां कामार्तो धर्षयिष्यति योषितम्।
मूर्धा तु सप्तधा तस्य शकलीभविता तदा।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-२६, श्लोक-५५-५६)

ध्यान दें। दोनों शाप एक जैसे हैं। पात्र बदले हुए हैं। यदि पहले ब्रह्माजी ने पुञ्जिकस्थला के परिप्रेक्ष्य में रावण को शाप दिया, तो वह रम्भा के साथ बलात्कार नहीं कर सकता था। यदि पहले रम्भा के परिप्रेक्ष्य में नलकूबर ने शाप दिया, तो रावण पुञ्जिकस्थला के साथ बलात्कार नहीं कर सकता था।

तो दोनों शाप एक ही कवि वाल्मीकि ने कैसे लिख दिये? क्या उत्तरकाण्ड आते-आते वाल्मीकि ब्रह्माजी का शाप भूल गये थे? नहीं ना।

तो फिर दोनों में एक ही शाप सत्य है, जो वाल्मीकि द्वारा लिखा हुआ है। युद्धकाण्ड में रावण अपने मुख से कहता है कि मुझे ब्रह्माजी का शाप है। जबकि उत्तरकाण्ड में उसके कवि ने नलकूबर द्वारा दिये गये शाप को बताया है, रावण द्वारा कहा गया नहीं बताया है।

रावण द्वारा अपने मुख से कहने के कारण ब्रह्माजी द्वारा दिया गया शाप सत्य माना जाएगा। इसे वाल्मीकि ने युद्धकाण्ड में लिखा और फिर उत्तरकाण्ड का क्रम तो युद्धकाण्ड के बाद है।

अतः नलकूबर द्वारा दिये गये शाप का वर्णन करने वाला उत्तरकाण्ड वाल्मीकि द्वारा नहीं लिखा गया, यह सुतरां सिद्ध हो जाता है।

इस पूरे प्रसंग के लिए 'शान्तं पापम्' कहना अपरिहार्य हो जाता है।

एक और विचित्र प्रसंग–उत्तरकाण्ड में एक प्रसंग और है, जो बड़ा विचित्र लगता है। जब कुश-लव राम दरबार में रामायण गाकर सुनाते हैं, तो राम उनसे रामायण के रचयिता के बारे में पूछते हैं। तब वे दोनों कहते हैं कि रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं। उन्होंने चौबीस हजार श्लोक और एक सौ

उपाख्यान लिखें हैं। इस महात्मा ने आदि से लेकर अन्त तक पाँच सौ सर्ग तथा छह काण्डों का निर्माण किया है। इसके सिवा उन्होंने उत्तरकाण्ड की भी रचना की है।—

आदि वै प्रभृति राजन् पञ्चसर्गशतानि च।
काण्डानि षट्कृतानीह सोत्तराणि महात्मना।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-९४, श्लोक-२७)

यह बात बालकाण्ड के तृतीय सर्ग में भी कही गयी है।

बड़ा ही विचित्र लगता है कि दोनों ही स्थानों पर इस महाकाव्य के छह काण्ड पहले बताकर यह कहा गया है कि वाल्मीकि ने उत्तरकाण्ड भी रचा है।

दोनों ही श्लोकों में सीधे यह क्यों नहीं कहा गया कि सात काण्डों में यह महाकाव्य महर्षि वाल्मीकि का रचा हुआ है, यह अलग से बताने की आवश्यकता आखिर क्यों पड़ रही है?

सीधा-सा उत्तर है कि उत्तरकाण्ड का कवि वाल्मीकि का नाम जोड़कर अपनी रचना को प्रामाणिकता देना चाहता है। वह भले प्रकार जानता है कि कवित्वशक्ति में वह वाल्मीकि से बहुत पीछे है। उत्तरकाण्ड काव्यरचना के रूप में प्रथम छह काण्डों के पासंग बराबर भी नहीं ठहरता। इसलिए इसे वाल्मीकि की रचना बताकर वह उत्तरकाण्ड को वैधता देना चाहता है। साथ ही नारद द्वारा बतायी गयी कथा में उत्तरकाण्ड का उल्लेख नहीं है, अतः अलग से उत्तरकाण्ड का उल्लेख करके उसको भी वाल्मीकिरचित सिद्ध किया जा सके।

अग्निपरीक्षा में इन्द्र और अग्नि का अन्तर–उत्तरकाण्ड में जब सीता के बारे में अपवाद उठता है कि वह रावण के पास रहकर भी पवित्र कैसे हो सकती है, तो राम बहुत क्षुब्ध होते हैं। वे सीता के द्वारा लङ्का में दी गयी अग्निपरीक्षा का स्मरण करते हैं। पर यहाँ भी कथा उस अग्निपरीक्षा से अलग है। इसमें राम कहते हैं कि अग्निपरीक्षा के उपरान्त स्वयम् इन्द्र ने सीता को पूर्णतः शुद्ध बताकर मुझे सौंपा था।

किन्तु युद्धकाण्ड में लङ्का में सीता द्वारा दी गयी अग्निपरीक्षा में इन्द्र कहीं नहीं है। वहाँ अग्निदेव प्रकट होकर सीता की शुद्धता का बखान करते हैं। राम से उनका संवाद होता है और वे सीता को राम को सौंपते हैं।

अब पुनः प्रश्न यही है कि एक ही कवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा इस प्रकार की अलग-अलग कथाएँ क्यों कही गयीं? क्या उनको विस्मृति दोष हुआ था?

नहीं। सामान्य-सा उत्तर है कि उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना है ही नहीं।

दण्डकारण्य–अरण्यकाण्ड में दण्डकारण्य का वर्णन है। यह वही दण्डकारण्य है, जहाँ राम अपने वनवास काल में सीता और लक्ष्मण के साथ लम्बे समय तक रहे थे। उनकी भेंट अगस्त्य ऋषि से हुई थी। शूर्पणखा की नाक कटी थी। वहीं जनस्थान में उन्होंने खरदूषण और त्रिशिरा सहित चौदह हजार राक्षसों का वध किया था। वहीं सीता का रावण द्वारा अपहरण किया गया था।

अब एक आश्चर्यकारी कथा उत्तरकाण्ड में आती है। राम शम्बूक-वध के उपरान्त पुनः दण्डकारण्य जाते हैं। वहाँ ऋषि अगस्त्य से पुनः उनकी भेंट होती है। वे बिल्कुल अनजान आदमी की तरह दण्डकारण्य के बारे में पूछते हैं। ऋषि अगस्त्य उनको दण्डकारण्य और जनस्थान की कथा सुनाते हैं।

आश्चर्य यह है कि अपने वनवासकाल का सबसे बड़ा भाग राम ने दण्डकारण्य में ही बिताया था। तब उन्होंने ऋषि अगस्त्य से उसकी कथा नहीं पूछी, जबकि तब भी उनकी वहाँ अगस्त्य से भेंट हुई थी। बाद में भी भेंट होती रही होगी। दण्डकारण्य इतना सूना और निर्जन भी नहीं था, जितना उत्तरकाण्ड में वर्णन किया गया है।

तो वाल्मीकि ने ही इतना बड़ा अन्तर कैसे कर दिया है? उत्तर यह है कि अन्तर वाल्मीकि ने नहीं किया। उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना है ही नहीं।

अहल्या की कथा–अहल्या की कथा बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड में एकदम अलग-अलग हैं। बालकाण्ड में कहा गया है कि इन्द्र अहल्या के पति गौतम मुनि का भेष धरकर अहल्या के पास गये थे। अहल्या ने उनको पहचान लिया था। फिर भी यह सोचकर कि—'अहो! देवराज इन्द्र मुझे चाहते हैं—इन्द्र के साथ समागम की सहमति दे दी।'

उत्तरकाण्ड में पहले तो कहा गया है कि इन्द्र ने अहल्या के साथ बलात्कार किया था। आगे यह स्पष्ट होता है कि इन्द्र ने

गौतम मुनि का भेष धरकर अहल्या से समागम किया था। पर वहाँ अहल्या की सहमति की चर्चा नहीं है।

पर गौतम मुनि ने इन्द्र को जो शाप दिया था, उसमें बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड में महान् अन्तर है। बालकाण्ड में गौतम इन्द्र को शाप देते हैं–दुर्मते! तुमने मेरा रूप धारण करके यह अकरणीय पापकर्म किया है, इसलिए तुम विफल (अण्डकोष से रहित) हो जाओगे।' रोष में भरे हुए महात्मा गौतम के ऐसा कहते ही सहस्राक्ष इन्द्र के दोनों अण्डकोष उसी क्षण पृथ्वी पर गिर पड़े।—

मम रूपं समास्थाय कृतवानसि दुर्मते।
अकर्तव्यमिदं यस्माद् विफलस्त्वं भविष्यसि।।
गौतमेनैवमुक्तस्य सुरोषेण महात्मना।
पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात्।।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-४२, श्लोक-२७ व २८)

बाद में पितृदेवताओं ने इन्द्र को भेड़े के अण्डकोष से युक्त किया।

किन्तु उत्तरकाण्ड में यह शाप अलग है। वहाँ गौतम ने इन्द्र को शाप देते हुए कहा 'वासव ! शक्र ! तुमने निर्भय होकर मेरी पत्नी के साथ बलात्कार किया है, इसलिए तुम युद्ध में जाकर शत्रु के हाथों में पड़ जाओगे। दुर्बुद्धे ! तुम जैसे राजा के दोष से मनुष्यलोक में भी यह जारभाव प्रचलित हो जाएगा, जिसका तुमने सूत्रपात किया है, इसमें संशय नहीं। जो जारभाव से पापाचार करेगा, उस पुरुष पर उस पाप का आधा भाग पड़ेगा और आधा

तुम पर पड़ेगा, क्योंकि इसके प्रवर्तक तुम्हीं हो। निस्सन्देह तुम्हारा स्थान स्थिर नहीं रहेगा। जो कोई भी देवराज के पद पर प्रतिष्ठित होगा, वह वहाँ स्थिर नहीं रहेगा। यह शाप मैंने इन्द्र मात्र के लिए दे दिया है। यह बात मुनि ने कही। —

यस्मान्मे धर्षिता पत्नी त्वया वासव निर्भयात्।
तस्मात् त्वं समरे शक्र शत्रुहस्तं गमिष्यसि।।
अयं तु भावो दुर्बुद्धे यस्त्वयेह प्रवर्तितः।
मानुषेष्वपि लोकेषु भविष्यति न संशयः।।
तत्रार्धं तस्य यः कर्ता त्वय्यर्धं निपतिष्यति।
न ते स्थावरं स्थानं भविष्यति न संशयः।।
यश्च यश्च सुरेन्द्रः स्याद् ध्रुवः स न भविष्यति।
एष शापो मया मुक्त इत्यसौ त्वां तदाब्रवीत्।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-३०, श्लोक-३२ से ३५)

अपना तो प्रश्न यही है कि एक ही कवि ने एक ही विषय पर दो अलग तरह की कथाएँ एक ही ग्रन्थ में कैसे लिखीं। उत्तर यही है कि उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना है ही नहीं।

उत्तरकाण्ड की निम्नता

समूचा उत्तरकाण्ड मानो राम के उदात्त गुणों को दबा देने के लिए ही लिखा गया है। इसी में वे शूद्र शम्बूक का वध करते हैं, जबकि पहले शूद्र निषादराज गुह को गले लगाते हैं। शबरी का सत्कार स्वीकार करते हैं।

इसी में प्रजा को प्रसन्न करने के लिए वे सीता का निर्वासन करते हैं, जबकि पहले सत्यधर्म की रक्षा के लिए प्रजा की अनसुनी करके वनवास जाना स्वीकार करते हैं।

पुनः देखें तो पहले वे उस अहल्या का उद्धार करते और सामाजिक जीवन प्रदान करते हैं, जो पति के छद्मवेश में आये परपुरुष के साथ समागम करती है। परपुरुष वाली द्वारा बलात् भोगी गयी सुग्रीव पत्नी रुमा को सुग्रीव को वापस दिलाकर प्रतिष्ठित करते हैं। यहाँ उस सीता का जिसकी शुद्धि की परीक्षा हो चुकी है, उसका त्याग कर देते हैं।

राम के महान् चरित्र को नीचा गिराने का काण्ड है उत्तरकाण्ड। वाल्मीकि ने राम के चरित्र को पुरुषोत्तम सिद्ध किया है। पुनः वे ही उस चरित्र को पुरुषाधम बना रहे हैं। यह स्वतः ही एक प्रमाण है कि उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना नहीं है। इसे अन्य प्रमाणों से सिद्ध किया जा चुका है। इसे भी एक ठोस प्रमाण ही माना जाना चाहिए।

कोई कह सकता है—हाँ, राम के चरित्र में गिरावट आयी, जिसे वाल्मीकि ने निःस्पृह भाव से लिखा। पर वाल्मीकि तो युद्धकाण्ड में ही राम के पूर्णशासनकाल के व्याज से उनका परलोकगमन बता चुके हैं। अब उत्तरकाण्ड में कौन-से राम और कौन-से वाल्मीकि?

अतः उत्तरकाण्ड वाल्मीकि रचित है ही नहीं।

वाल्मीकि और राम की समकालीनता

वाल्मीकि राम के समकालीन हैं, इसमें कोई संशय नहीं।

और इसके लिए उत्तरकाण्ड को प्रमाण मानने की आवश्यकता नहीं। अयोध्याकाण्ड में लिखा है कि राम, सीता और लक्ष्मण जब वनवास के लिए अयोध्या से निकलते हैं, तो वे चित्रकूट में वाल्मीकि से मिलने बद्धाञ्जलि होकर उनके आश्रम में जाते हैं।—

इति सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च कृताञ्जलिः।
अभिगम्याश्रमं सर्वे वाल्मीकिमभिवादयन्।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-५६, श्लोक-१६)

वहीं ठहरकर वे चित्रकूट में अपनी पर्णकुटी तैयार करते हैं। अतः वाल्मीकि राम के समकालीन हैं, यह सुतरां सिद्ध है।

तो यह बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है कि वाल्मीकि के समक्ष सीता निर्वासन की कोई घटना हुई ही नहीं थी। हुई होती, तो वे अवश्य लिखते। उनके जैसा करुणाशील, निर्भीक और समर्थ कवि इतनी बड़ी घटना को देखकर चुप नहीं रह सकता था। बड़ी स्पष्टता से वाल्मीकि ने राम की मानुषिक दुर्बलताओं का भी वर्णन किया है। जैसे अयोध्या का राज्य चले जाने का दुःख, समय-समय पर अपने दुःखों के लिए कैकेयी को उत्तरदायी बताकर उसको कोसना, रावण एवं मेघनाद द्वारा राम को युद्धभूमि में मूर्च्छित कर दिया जाना, राम का सीता और लक्ष्मण के लिए शोक से विचलित होना, रावण के ऊपर विजय होगी या नहीं–यह संशय होना, अत्यधिक क्रुद्ध होना आदि भी वाल्मीकि ने सहजता से बताये हैं।

दूसरे, वे महर्षि हैं, राम के दरबारी कवि नहीं। तीसरे, वे

राम के ब्रह्मलोक जाने के बाद भी जीवित रहे हैं, तभी उन्होंने राम के ग्यारह हजार वर्षों के शासन का वर्णन किया है। अतः उनके लिए सीता निर्वासन या शम्बूक वध लिखने में कोई बाधा नहीं थी।

पर उन्होंने नहीं लिखा, तो इससे यही सिद्ध होता है कि सीता निर्वासन या शम्बूक–वध की कोई घटना घटी ही नहीं थी।

उत्तरकाण्ड कई ग्रन्थों का घालमेल है—अब इन सबसे परे हटकर एक अन्य बात। यह तो सिद्ध हो चुका कि उत्तरकाण्ड आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की रचना नहीं है। पर क्या यह किसी एक कवि की रचना है?

उत्तर के लिए हम एक विशेष प्रसंग देखते हैं। उत्तरकाण्ड में जब सीता धरती में समा जाती है, तब राम सीता का स्मरण कर बहुत शोक करते हैं। तब ब्रह्माजी आकर उनको उनके नारायणस्वरूप का स्मरण कराते हैं और कहते हैं कि आप अपने भविष्य के बारे में अभी और सुन लीजिए। वाल्मीकि ने इसकी रचना पहले ही कर दी है। किन्तु ब्रह्माजी यहाँ एक विचित्र बात कहते हैं कि जो काव्य शेष रह गया है, वह उत्तरकाण्ड है। उसे आप ऋषियों के साथ सुनिए–

उत्तरं नाम काव्यस्य शेषमत्र महायशः।
तच्छृणुस्व महातेज ऋषिभिः सार्धमुत्तमम्।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-८९, श्लोक-२१)

यदि यहाँ से उत्तरकाण्ड है, तो इसके पूर्व जो श्लोक

उत्तरकाण्ड के प्रथम सर्ग से इस नवासीवें सर्ग के बीसवें श्लोक तक हैं, वे कौन-से काण्ड में हैं?

सच तो यह है कि यहाँ से आगे की कथा किसी और ग्रन्थ की है, जिसे उत्तरकाण्ड में जोड़ दिया गया है। यह वैसे ही है जैसे रावण द्वारा अप्सरा रम्भा का बलात्कार और नलकूबर द्वारा उसको दिया गया शाप कि अन्य किसी अकामा नारी की धर्षणा करने पर उसके सिर के सात टुकड़े हो जाएँगे, यह कथा 'रावणसंहिता' में भी है और वहीं से उठाकर उत्तरकाण्ड में जोड़ दी गयी है। वर्ना जो वाल्मीकि अप्सरा पुञ्जिकस्थला के बलात्कार के बाद रावण को ब्रह्माजी द्वारा आगे अकामा नारी के साथ बलात्कार करने पर सिर के सौ टुकड़े हो जाने का शाप दिया जाना युद्धकाण्ड में बता चुके हैं, वे ही रम्भा के प्रसंग में रावण को नलकूबर के द्वारा दिये गये शाप का वर्णन क्यों करते, जबकि पहले शाप के आधार पर ही रावण रम्भा का बलात्कार कर ही नहीं सकता था।

उत्तरकाण्ड में रावण, वसिष्ठ, हनुमान् आदि का जो विस्तृत वर्णन है, वह भी यही सिद्ध करता है कि ये अलग-अलग ग्रन्थ थे, जिनको बाद में समेकित करके वाल्मीकिरामायण में जोड़ दिया गया।

यदि बालकाण्ड के तीसरे सर्ग में कहे गये 'सभविष्यं सोत्तरम्' का अर्थ यही लिया जाय कि भविष्यसहित उत्तरकाण्ड, तो यहाँ भविष्य को ही उत्तरकाण्ड नाम कैसे दिया गया है। यह तो बालकाण्ड के तीसरे सर्ग के 'सभविष्यं सोत्तरम्' और 'उत्तरं नाम काव्यस्य शेषमत्र महायशः' के बीच जबर्दस्त विरोधाभास है।

सच तो यह है कि उत्तरकाण्ड में राम के चरित्र के साथ-साथ वाल्मीकि के कविस्वरूप का भी ह्रास दिखाने की कोशिश की गयी है। सूक्ष्मता से अवगाहन करने पर ही यह समझ में आता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि राम का सीता के प्रति अनिर्वचनीय प्रेम, राम की स्त्री के प्रति स्वाभाविक करुणा, वाल्मीकि का राम का समकालीन होना और उनके द्वारा रचित ग्रन्थ रामायण के छह काण्डों की सत्यता एवं उत्तरकाण्ड का वाल्मीकि के द्वारा नहीं रचित होना, ये सारे प्रमाण सिद्ध करते हैं कि राम द्वारा सीता निर्वासन की कथा सर्वथा झूठी हैं।

राम द्वारा सीता का परित्याग बताना राम के साथ अन्याय है, सीता के साथ अन्याय है, वाल्मीकि के साथ अन्याय है और उन पुरवासियों के साथ अन्याय है, जिनकी काल्पनिक कथा गढ़कर उसके मुख में सीता सम्बन्धी अपवाद डाला गया। इन सभी अन्याय का निवारण यह सिद्ध करके कि 'राम द्वारा सीता का निर्वासन एक सर्वथा झूठी कहानी है' किया जाना चाहिए और इस शोध प्रबन्ध में यही किया गया है।

हमें यह मानना चाहिए कि वनवास एवं लङ्का से लौटने के बाद जिस प्रकार राम ने महाराज होकर अयोध्या का शासन एवं सेवा की, उसी प्रकार सीता ने राम के साथ महारानी बनकर अयोध्या का शासन एवं सेवा की। और हमें गर्वपूर्वक इसका उद्घोष करना चाहिए।

आखिर उत्तरकाण्ड कब जोड़ा गया

एक प्रश्न उठता है कि आखिर उत्तरकाण्ड वाल्मीकिरामायण में कब जोड़ा गया। वाल्मीकि आदिकवि हैं, राम के समकालीन हैं। राम का समय त्रेता का उत्तरार्ध माना जाता है, जो लगभग बारह लाख वर्ष पूर्व है। नासा ने रामसेतु का जो वर्ष निर्धारित किया है, वह भी लगभग इतना ही है। अतः वाल्मीकिरामायण लगभग बारह लाख वर्ष पूर्व रचा गया है। लिखित रूप में नहीं, अपितु श्रुतिपरम्परा के रूप में यह तब से चल रहा है।

उत्तरकाण्ड की भाषा एवं कथनशैली पौराणिक है। पुराणों के रचयिता वेदव्यास हैं। उनका समय द्वापर का अन्तिम भाग माना जाता है, जो आज से लगभग छह हजार वर्ष पूर्व का है। यदि उत्तरकाण्ड को पुराणों के प्रारम्भ काल की भी रचना माना जाय, तो भी यह दस हजार वर्ष से पूर्व का नहीं माना जा सकता। अतः वाल्मीकिरामायण के छह काण्डों और उत्तरकाण्ड में लगभग साढ़े ग्यारह लाख वर्ष का अन्तराल तो निश्चित है। तब तक रामकथा में कई परिवर्तन लोक में प्रचलित हो चुके होंगे। उसी का लाभ उठाकर उत्तरकाण्ड के कवि ने वाल्मीकि नाम से ही इस काण्ड की रचना कर डाली और उसे रामायण में जोड़ दिया।

सीता निर्वासन की कथा उठी ही क्यों?

एक प्रश्न यह भी उठ सकता है कि सीता निर्वासन की कथा उठी ही क्यों? तो इसको ऐसे समझना चाहिए कि समय बीतने के

साथ कहानियों का स्वरूप बदलता है, विशेषकर लोककथाओं का। लोक अपने परिवेश, अपनी पारिस्थितिकी आदि के अनुसार कथाओं को नये आयाम देता है।

उदाहरण के लिए हम यह मानते हैं कि राम ने भगवती कात्यायनी या दुर्गा की आराधना करके उनसे 'विजयी भव' का वरदान पाकर रावण का वध आश्विन मास के शुक्लपक्ष की दशमी को किया था, जिसकी स्मृति में हम दशहरा मनाते हैं।

जबकि वाल्मीकिरामायण में कहीं यह वर्णन नहीं है। उसमें राम ऋषि अगस्त्य द्वारा बताये गये सूर्य मन्त्र का पाठ करके रावण वध करते हैं। वाल्मीकिरामायण के युद्धकाण्ड के १०५वें सर्ग में ये मन्त्र 'आदित्यहृदय' मन्त्र नाम से पठित हैं। ये सूर्य की स्तुतिपरक मन्त्र हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते।।
ब्रह्मेशानच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः।।
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१०५, श्लोक-१८ से २०)

अर्थात् उग्र, वीर और सारङ्ग (शीघ्रगामी) सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करने वाले प्रचण्ड तेजोधारी मार्तण्ड को नमस्कार है। आप ब्रह्मा, शिव और विष्णु के भी

स्वामी हैं। सूर आपकी संज्ञा है और सूर्यमण्डल आपका ही तेज है। आप प्रकाश से परिपूर्ण हैं। सबको स्वाहा कर देनेवाला अग्नि आपका ही स्वरूप है। आप रौद्ररूप धारण करने वाले हैं। आप अज्ञान और अन्धकार के नाशक, जड़ता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करने वाले हैं। आपका स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करने वाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप हैं। आपको नमस्कार है।

आदित्यहृदय के ऐसे १९ मन्त्रों का तीन बार जप करके राम हर्ष प्राप्त करते हैं। फिर वे समराङ्गण में रावण का वध कर डालते हैं।

राम द्वारा भगवती की स्तुति का वर्णन श्रीमद्भागवतमहापुराण एवं श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में आता है। यह शाक्त जनों द्वारा देवी की महत्ता को और अधिक स्थापित करने के लिए बनायी गयी कथा है कि राम ने रावण को मारने के लिए दुर्गा की आराधना की। देवीभागवत में कहा गया है कि सूर्य में देवी की विभावना करनी चाहिए।

यदि इसको मानें, तो राम ने सूर्य की आराधना करके देवी की आराधना की, यह प्रकारान्तर से सिद्ध हो जाता है।

कहानियाँ ऐसे बदलती हैं। सीता निर्वासन के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग कहानियाँ हैं। कहीं कौसल्या, कहीं राम की अन्य पत्नियाँ, कहीं शान्ता, कहीं शुक-शुकी आदि को उत्तरदायी बताकर सीता निर्वासन की कहानियाँ गढ़ी गयी हैं।

निर्वासन की कथा के जन्म की पड़ताल

अब राम द्वारा सीता के निर्वासन की झूठी कथा के जन्म की पड़ताल करते हैं। इस लेखक को एक बार ट्रेन में एक महिला डॉक्टर ने बताया कि प्राचीनकाल में राजकुल की स्त्रियाँ गुरुकुल में प्रसव के लिए जाती थीं, क्योंकि गुरुकुल का मनमोहक वातावरण प्रसव के लिए बहुत अनुकूल होता है। दिन-रात वेदमन्त्रों का पाठ, धार्मिक और वीरताभरी चर्चाएँ, सुन्दर प्राकृतिक वातावरण, गर्भिणी के प्रति सेवाएँ आदि सब मिलकर जच्चा-बच्चा दोनों पर सुन्दर प्रभाव डालते हैं। उन डॉक्टर का कहना था कि उनके व्यवसाय के ज्ञान के आधार पर यह प्रसवार्थ गुरुकुल निवास बिल्कुल उचित कहा जा सकता है। अर्थात् उनका डॉक्टरी पेशा इसे स्वीकार करता है।

लेखक यह सुनकर चौंका। उसे साफ समझ में आ गया कि सीता प्रसव के लिए वाल्मीकि आश्रम में गयी होंगी। लक्ष्मण उनको लेकर गये होंगे। इसी बीच किसी ने सीता के विषय में कोई रावण सम्बन्धी अपवाद कहा होगा। आज भी जनता बहुत से श्रेष्ठ व्यक्तियों के चरित्र के बारे में फुसफुसाती रहती है।

उत्तरकाण्ड में भी ऐसी कथा है कि गर्भिणी सीता तपोवन यानी वाल्मीकि का आश्रम देखना चाहती है। गर्भिणी की इच्छा को संस्कृत में 'दोहद' कहते हैं। और इसे पूरा करना ससुरालवालों के लिए आवश्यक समझा जाता है। राम सीता को हँसकर कहते हैं कि तुमको वहाँ कल भेज दिया जाएगा। तब तक रामचन्द्र को सीता के विषय में किसी अपवाद का पता भी

नहीं है। पर इसके ठीक अगले सर्ग में सीता के बारे में अपवाद बताया गया है।

तो सभी कड़ियों को जोड़ने पर यही कथा बनती है कि सीता तपोवन देखने एवं प्रसव के लिए तपोवन गयी होंगी। पीछे-से कोई अपवाद सीता के बारे में उठा होगा। उत्तरकाण्ड के कवि ने दोनों को मिलाकर ऐसी खिचड़ी पकायी कि कथा बन गयी कि राम ने लोकापवाद से खिन्न होकर सीता को निकाल दिया।

पर अब हमें इससे क्या? हम तो यह नितरां-सुतरां सिद्ध कर चुके हैं कि राम द्वारा सीता के निर्वासन की कथा वाल्मीकिविरचित नहीं है। और यह कथा प्रमाणों के आधार पर सर्वथा झूठी है, सर्वथा झूठी है, सर्वथा झूठी है।

जयतु वाल्मीकिः।
जयताम् सीतारामौ।।
जयन्तु रामायणपराः।।

राम द्वारा शम्बूक वध : एक और झूठी कहानी

प्रभु राम की प्रभुता पर दो बड़े कलंक हैं—माता सीता का निर्वासन और तपस्यारत शूद्र शम्बूक का वध।

दोनों को ही न्यायसंगत ठहराने के प्रयत्न शास्त्र के प्रतिनिविष्ट विश्लेषकों द्वारा हुए हैं। वे यह मानते हैं कि प्रभु राम ने जो किया, वह उनकी लीला थी। उसमें 'ननु-न च' का अवकाश नहीं है।

एक वर्ग वह है, जो राम में सदैव खोट ही निकालता है। वह राम को नारी और शूद्र विरोधी बताता है।

वस्तुतः इन प्रसङ्गों को तथ्यपरक होकर निरपेक्ष दृष्टि से देखने की आवश्यकता है। तो आइए, हम राम द्वारा शूद्र शम्बूक के वध की वास्तविकता को जाँचते हैं।

यह कथा 'वाल्मीकिरामायण' के उत्तरकाण्ड में आती है।

कथा यों है—

राम के राज्य में एक ब्राह्मण का बालक मर गया। ब्राह्मण उस मृत बालक को राम के राजद्वार पर ले आया। रोते हुए कहने लगा–

'मेरा पुत्र मरा है, तो इसका कारण राजा राम का ही कोई

बड़ा दुष्कर्म है। राजा के दोष से जब प्रजा का विधिवत् पालन नहीं होता, तो प्रजा को ऐसी विपत्ति का सामना करना पड़ता है। राजा के दुराचारी होने से ही प्रजा की अकाल मृत्यु होती है। दूसरे राज्य में रहने वाले बालकों को मृत्यु से भय नहीं है। अतः इस बालक को जीवित कर दो, अन्यथा मैं अपनी पत्नी के साथ इस राजद्वार पर ही प्राण त्याग दूँगा।'

राम ने उस ब्राह्मण का क्रन्दन सुना। उनने मार्कण्डेय, मौद्गल्य, वामदेव, काश्यप, कात्यायन, जाबालि, गौतम, नारद, वसिष्ठ आदि ऋषियों से ब्राह्मण पुत्र की मृत्यु का कारण पूछा। तब नारद ने उनको बताया कि शूद्र को तपस्या नहीं करनी चाहिए, ऐसा धर्म है। किन्तु ऐसा लगता है कि आपके राज्य की किसी सीमा पर कोई दुर्बुद्धि शूद्र तपस्या कर रहा है, जिसके फलस्वरूप इस ब्राह्मण बालक की मृत्यु हो गयी है। अतः आप उस शूद्र को ढूँढ़ें। उसका तपस्यारूप दुष्कर्म रोकें। इससे इस बालक को नया जीवन प्राप्त होगा।

नारद की बात सुनकर राम पुष्पक विमान पर बैठकर उस शूद्र को खोजने निकले। दक्षिण दिशा में उनको वह शूद्र शम्बूक उलटा लटककर तपस्या करता हुआ दिखा। उनने शम्बूक से तपस्या करने का कारण पूछा। उस तपस्वी शम्बूक ने इस प्रकार कहा–

'मैं शूद्र योनि में उत्पन्न हुआ हूँ और सदेह स्वर्गलोक को जाकर देवत्व प्राप्त करना चाहता हूँ।'

उसके ऐसा कहते ही राम ने तलवार से शम्बूक की गर्दन काट दी। आकाश में खड़े इन्द्र-अग्नि आदि देवता 'साधु-साधु' करने लगे।

वाल्मीकिरामायण के किसी भी सजग व सतर्क अध्येता को यह कथा अनायास ही बनावटी और राम की महिमा को खण्डित करने के उद्देश्य से लिखी गयी प्रतीत होगी।

विरोधाभास

यदि रामराज्य है, तो पहले तो उस ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु होनी ही नहीं चाहिए थी। युद्धकाण्ड में, जहाँ रामराज्य का वर्णन है, वहाँ स्पष्ट लिखा है—

वृद्धों ने बालकों के अन्त्येष्टि संस्कार नहीं करने पड़ते थे।

न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-६९)

तब अचानक ही ब्राह्मण का वह बालक कैसे मर गया?

स्पष्ट है कि रामराज्य में खोट दिखाने के लिए ही इस कथा की कल्पना की गयी है।

पुनः युद्धकाण्ड में ही लिखा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों के लोग लोभरहित होते थे। उनको अपने वर्णाश्रमोचित कर्मों से सन्तोष था। सभी उसके पालन में लगे रहते थे।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा लोभवर्जिताः।
स्वकर्मसु प्रवर्तन्ते तुष्टाः स्वैरेव कर्मभिः।।

(वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग-१२८, श्लोक-१०४)

तो उत्तरकाण्ड में शम्बूक नामक कथित शूद्र को सदेह स्वर्ग जाने का लोभ कैसे उत्पन्न हो गया?

सदेह स्वर्गगमन का निषेध

यह सामान्य नियम था कि कोई भी मनुष्य सदेह स्वर्ग नहीं जा सकता। स्वयं राम के पूर्वज त्रिशङ्कु सदेह स्वर्ग जाना चाहते थे पर गुरु वसिष्ठ ने इसके लिए यज्ञ कराने से, यह कहते हुए कि कोई सदेह स्वर्ग नहीं जा सकता, साफ इनकार कर दिया था। तब त्रिशङ्कु ने विश्वामित्र को, जो वसिष्ठ से ईर्ष्या रखते थे, पुरोहित बनाया। उनसे वह यज्ञ कराया। त्रिशङ्कु स्वर्ग की ओर उठने भी लगे थे, पर इन्द्र के वज्र की मार खाकर उलटे गिरने लगे। तब विश्वामित्र ने अन्तरिक्ष में ही उनके लिए एक लोक का निर्माण कर दिया। यह कथा वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड में है।

यह बात शम्बूक के विरुद्ध जाती है। उसका सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा करना वैसे ही गलत था, जैसे राम के पूर्वज त्रिशङ्कु का सदेह स्वर्ग जाने की इच्छा करना।

उत्तरकाण्ड में शम्बूक कहता है—

शूद्रयोन्या प्रजातोऽस्मि तप उग्र समास्थितः।
देवत्वं प्रार्थये राम सशरीरो महायशः।
न मिथ्याहं वदे राम देवलोकजिगीषया।
शूद्रं मां विद्धि काकुत्स्थ शम्बूको नाम नामतः।।

(वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग-७६, श्लोक-२-३)

अर्थात्–शूद्रयोनि में उत्पन्न मैं उग्र तप कर रहा हूँ। राम! मैं सशरीर देवत्व प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं झूठ नहीं बोलता, मैं देवलोक को जीतना चाहता हूँ।

यह लोभ शम्बूक के हृदय में उत्पन्न होते ही रामराज्य का

वर्णन धूमिल हो जाता है, क्योंकि वहाँ स्पष्ट कहा गया है कि चारों वर्ण लोभरहित होकर अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करते थे। इसलिए यहाँ भी लगता है कि रामराज्य में खोट निकालने के लिए ही यह कथा गढ़ी गयी है।

इस कथा में महर्षि वाल्मीकि को भी नीचे गिराने का षड्यन्त्र किया है। इस कहानी के अनुसार रामराज्य के बारे में अपनी कही हुई बात को ही कथित रूप से खण्डित करते हैं आदिकवि, जबकि वाल्मीकि संस्कृत के अद्वितीय कवि हैं। सत्य धर्म का पालन करने का आग्रह ही वाल्मीकि की रामायण का केन्द्रीय विषय है।

नारद द्वारा सुनायी गयी कथा

वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में देवर्षि नारद आदि कवि महर्षि वाल्मीकि को रामकथा सार रूप में सुनाते हैं। सौ श्लोकों में विस्तृत इस सर्ग में नारद राम के जीवन की हर महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख करते हैं—जन्म से लेकर रामराज्य की स्थापना, उसकी प्रभावशीलता और राम के सर्वजनों के साथ परधामगमन तक। पुनः नारद कथा श्रवण का माहात्म्य भी बताते हैं।

किन्तु कहीं भी नारद सीता निर्वासन और शम्बूक वध की चर्चा नहीं करते। तो स्पष्ट है कि ये घटनाएँ हुई ही नहीं थी।

अब उलटबाँसी देखिए कि वही नारद उत्तरकाण्ड में शूद्र शम्बूक की तपस्या रोकने के लिए राम को उत्प्रेरित करते हैं।

यदि राम ने शम्बूक का वध किया, तो यह घटना नारद को तो भली-भाँति ज्ञात होनी चाहिए। तो उनने वाल्मीकि को रामकथा सुनाते समय इसका वर्णन करना चाहिए था। पर नहीं किया।

तो इसका सीधा अर्थ है कि शम्बूक वध की कथा काल्पनिक है और बहुत आगे चलकर वाल्मीकिरामायण में जोड़ी गयी।

यहाँ यह बताना उचित जान पड़ता है कि नारद ने राम को अवतार मानकर कोई बात नहीं की है। पर गद्‌गद होकर रामराज्य की उत्तमता की भविष्यवाणी की है। वे कहते हैं—

न पुत्रमरणं केचिद् द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।

(वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग-१, श्लोक-९१)

अर्थात् रामराज्य में पुरुष कभी अपने पुत्र की मृत्यु नहीं देखेंगे।

तो फिर ब्राह्मण का पुत्र कैसे मर गया?

विचारणीय प्रश्न

शूद्र शम्बूक की तपस्या से ब्राह्मण का ही पुत्र क्यों मरा? क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में से किसी का पुत्र क्यों नहीं मरा? और भी तो ब्राह्मणों के पुत्र रहे होंगे, वे क्यों नहीं मरे? शूद्र शम्बूक की तपस्या यदि अधर्म थी, तो सबके लिए थी। तो सब पर उसका फल पड़ना चाहिए था। पर एक ही ब्राह्मण का पुत्र क्यों मरा? उस ब्राह्मण का शूद्र शम्बूक से कोई परिचय पहले रहा हो, ऐसा भी कोई वर्णन वहाँ नहीं है।

साफ लगता है कि राम, वाल्मीकि और ब्राह्मण को नीचा दिखाने के लिए शम्बूक वध की कथा का कुचक्र रचा गया है। और कुचक्री लेखक इसमें सफल भी हो गया।

राम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम से एक बड़ा वर्ग वितृष्णा करने लगा।

वाल्मीकि जैसे अद्वितीय सार्वजनीन कवि एक-दो जातियों में सीमित हो गये।

और हर वर्ग अपनी कमियों का दोष ब्राह्मणों के सिर मढ़ने लगा।

सत्यधर्म की विजय की अप्रतिम गाथा रामायण की उदात्तता किनारे कर दी गयी।

अब इस कुचक्र को तोड़ने का समय है।

राम का शूद्र प्रेम

अब हम, राम का शूद्रों के प्रति पूर्व में क्या आचरण रहा है, इसको जानते हैं।

राम को जब वनवास होता है और वे वन जाने लगते हैं, तो सभी सेवकों का गला आँसुओं से रुँध जाता है। राम उनमें से प्रत्येक को, अपने वनवास काल को ध्यान में रखकर, चौदह वर्षों तक जीविका चलाने योग्य धन देते हैं। उनको कहते हैं जब तक मैं वन से लौटकर न आऊँ, तब तक तुम मेरे और लक्ष्मण के घरों को सूना मत करना।

अथाब्रवीद् बाष्पगलांस्तिष्ठतश्चोपजीविनः।
स प्रदाय बहुद्रव्यमेकैकस्योपजीवनम्।।
लक्ष्मणस्य च यद्वेश्म गृहं च यदिदं मम।
अशून्यं कार्यमेकैकं यावदागमनं मम।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-३२, श्लोक-२४ व २५)

ये सेवक कौन थे?

क्या ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य?

नहीं, शूद्र, क्योंकि सेवा का कार्य उनके जिम्मे था। दास-दासी शूद्रों को ही कहा गया है। राम का इसमें वात्सल्य प्रकट होता है या तिरस्कार भाव।

राम-लक्ष्मण के घरों की रक्षा कोई अन्य सेवक करते या राजा दशरथ के सैनिक, पर राम ने अपने सेवकों को अधिमान दिया। उनको चौदह वर्षों की जीविका एक साथ दी और घर की रक्षा के व्याज से उनको कार्य दिया।

यह कहना ही गलत है कि शूद्रों को समाज में नीचा स्थान मिला हुआ था। एक उदाहरण देखते हैं।

उस समय के सारथि सूत कहलाते थे। वे रथ निर्माण भी करते थे और रथ हाँकते भी थे। वे शूद्र होते थे। किन्तु सारथि को रथी के साथ लगभग सखाभाव प्राप्त था। यदि हम वाल्मीकिरामायण पढ़ें, तो हमें पता चलेगा कि सारथि सुमन्त्र, यानी शूद्र, राजा दशरथ के मन्त्री भी थे। वहाँ लिखा है—

तच्छ्रुत्वा मन्त्रिणो वाक्यं राजा मन्त्रिणमब्रवीत्।

अर्थात् मन्त्री (सुमन्त्र) की बात सुनकर राजा (दशरथ) ने मन्त्री (सुमन्त्र) को कहा।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-१४, श्लोक-६४)

इसके अतिरिक्त चित्ररथ नामक एक और सूत थे। वे भी सचिव थे। लिखा है—

सूतश्चित्ररथश्चार्यः सचिवः सुचिरोषितः।

अर्थात् चित्ररथ नामक सूत श्रेष्ठ सचिव भी है। वे दीर्घकाल से राजकुल की सेवा कर रहे हैं।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-३२, श्लोक-१७)

यदि शूद्र अस्पृश्य थे, तो सुमन्त्र और चित्ररथ मन्त्री कैसे बन गये?

सुमन्त्र का दशरथ, राम सहित चारों भाई बहुत आदर करते थे। सुमन्त्र ने राम वनवास को लेकर कैकेयी को भयंकर फटकार लगायी थी। यहाँ तक कह दिया था कि तुम अपनी माता के समान निर्दय हो।

क्या कोई निम्न स्थान का व्यक्ति महारानी को फटकार सकता था?

तथ्य तो यही बता रहे हैं कि उस समय शूद्रों को बराबर का स्थान प्राप्त था और उनको मन्त्री भी बनाया जाता था। राम द्वारा शम्बूक का वध करवाकर इस समरस सामाजिक जीवन के प्राणतत्त्व की हत्या कर दी, उस धूर्त लेखक ने। और बहाना लिया आदिकवि वाल्मीकि का।

आदिकवि की आत्मा कितनी संतप्त हुई होगी!

अस्तु, शूद्र सुमन्त्र के प्रति राम ने अयोध्याकाण्ड में गहरा आदर दर्शाया है। वनवास के लिए जाते हुए राम, सीता और लक्ष्मण को लेकर सुमन्त्र ही सारथि बनकर गङ्गा तट तक लेकर गये थे। वहाँ से राम ने उनको वापस लौटने का अनुरोध किया। इस पर सुमन्त्र रोने लगे और राम के साथ ही रहने की अनुमति माँगने लगे। तब राम उनको कहते हैं—

मेरी दृष्टि में इक्ष्वाकुवंशियों का हित करने वाला सुहृद् आपके समान अन्य कोई नहीं है। आप ऐसा प्रयत्न करें, जिससे महाराज दशरथ को मेरे लिए शोक नहीं हो।

इक्ष्वाकूनां त्वया तुल्यं सुहृदं नोपलक्षये।
यथा दशरथो राजा मां न शोचेत्तथा कुरु।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-५२, श्लोक-२२)

यह है राम का सुमन्त्र के प्रति आदर।

पुनः एक प्रसङ्ग आता है—निषादराज गुह का। निषाद यानी मल्लाह यानी नदी पार कराने वाला। यानी शूद्र।

वे राजा दशरथ के मित्र थे। वाल्मीकि ने उनको राम के प्रति भी मित्रभाव रखने वाला बताया है। शृङ्गवेरपुर में राम का वनवास सुनकर वे राम से मिलने आये।

उनने राम को कहा–'मेरा राज्य आपका ही राज्य है। आप ही इसका शासन करें।' तब राम ने निषादराज गुह को कहा कि आपके यहाँ आने से, हमें स्नेह से देखने मात्र से हमारा सत्कार हो गया। और ऐसा कहकर उनने गुह को गले लगा लिया।

गुहमेवं ब्रुवाणं तु राघवो प्रत्युवाच ह।
अर्चिताश्चैव दृष्टाश्च भवता सर्वदा वयम्।।
पद्भ्यामभिगमाच्चैव स्नेहसंदर्शनेन च।
भुजाभ्यां साधुवृत्ताभ्यां पीडयन् वाक्यमब्रवीत्।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-५०, श्लोक-४०-४१)

शूद्र गुह को गले लगाने वाले राम ने शम्बूक को केवल

इसलिए मार दिया, क्योंकि वह शूद्र था, क्या इस पर विश्वास किया जा सकता है?

वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड और युद्धकाण्ड, इन छह काण्डों में शूद्र के बारे में एक भी अनुचित वाक्य नहीं है। न कहीं कोई दुर्भावना दिखायी देती है। बल्कि एक अद्भुत सामाजिक समरसता के दर्शन होते हैं। राम के प्रति शूद्रों का अगाध प्रेम और राम द्वारा उनका यथेष्ट सम्मान ही इनमें चित्रित हुआ है।

कुछ और दृष्टान्त

राम जब वनवास की ओर जाने लगे, तो सारी अयोध्या में महान् कोलाहल मच गया। सब लोग व्याकुल हो उठे। अयोध्या के सभी बच्चे-बूढ़े अत्यन्त पीड़ित होकर राम के पीछे वैसे ही दौड़े, मानो धूप से पीड़ित प्राणी पानी की ओर भागे जाते हों।

ततः सबालवृद्धा सा पुरी परमपीडिता।
राममेवाभिदुद्राव घर्मार्तः सलिलं यथा।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-४५, श्लोक-५)

प्रजा राम को वनगमन से रोक रही है। राम प्रजा को अपने पीछे आने से रोक रहे हैं। तमसा नदी के तट तक प्रजा जाती है। राम यह सोचकर कि यह प्रजा हमारे कारण और दुःख ना उठाये, रात में ही उनको छोड़कर निकल जाते हैं। प्रातः पुरवासी जागने पर राम को निकल गया जान विलाप करते हैं और रोते-बिलखते अयोध्या लौटते हैं।

देखिए—

सारी प्रजा राम में अनुरक्त है। राम सारी प्रजा को सन्तानवत् स्नेह करते हैं। क्या सारी प्रजा कहने से उसमें शूद्र सम्मिलित नहीं है?

वाल्मीकि ने कहीं नहीं लिखा-शूद्र को छोड़कर बाकी प्रजा।

सब यानी शूद्र भी राम को बहुत प्रेम करते हैं और राम भी उनको बहुत स्नेह करते हैं।

फिर भी इसमें कोई सन्देह नहीं रह जाय कि शूद्र राम को इतना प्रेम करते हैं, इसके लिए हम आगे का सर्ग देखेंगे।

शूद्र आर्य हैं

राम के वनवास में जाने पर भरत ने राजसिंहासन पर बैठना था। पर उनने अस्वीकार कर दिया। वे राम को वनवास से लौटाने के लिए तैयार हुए।

यह सुनते ही लगभग सारी अयोध्या ही भरत के साथ चल पड़ी। वे लक्ष्मण सहित राम का दर्शन करने के लिए उनके सम्बन्ध में विचित्र अर्थात् अलग-अलग तरह की बातें कर रहे थे।

यहाँ एक बात ध्यातव्य है कि वाल्मीकि ने अयोध्या के उन लोगों के लिए 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया है।

प्रयाताश्चार्यसंघाता रामं द्रष्टुं सलक्ष्मणम्।

अर्थात् आर्यों का समूह लक्ष्मण सहित राम को देखने के लिए निकला या चला।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-८३, श्लोक-७)

यानी वाल्मीकि शूद्रों को भी आर्य मानते हैं।

क्योंकि आर्य श्रेष्ठ कर्म करने वालों को कहते हैं। हम सब आर्य हैं। कोई अनार्य नहीं। अनार्य अर्थात् श्रेष्ठ आचरण न करने वाला।

आज जो अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के जनों को सिखाया जाता है कि आप शूद्र भी हैं, अनार्य भी, उसका खण्डन वाल्मीकि द्वारा हो जाता है। यदि कोई शूद्र है, तो अनार्य नहीं है। और अनार्य है, तो शूद्र नहीं है।

शूद्र शब्द का अप्रचलन

एक बात और आश्चर्यजनक है। वाल्मीकि ने शम्बूक के अतिरिक्त केवल दो या तीन बार सीधे-सीधे शूद्र शब्द का प्रयोग किया है। अधिकतर नहीं किया है। वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तो कहते हैं, बाकी वर्ग के लिए उनके व्यवसाय का उल्लेख करते हैं। इससे लगता है कि उस समय तक शूद्र शब्द बहुत प्रचलन में आया नहीं था। शूद्र में जिन व्यवसाय के लोगों की गिनती होती है, वे प्रायः अपने व्यावसायिक नाम से–यथा बुनकर, धूपक आदि के द्वारा ही अधिकतर जाने जाते थे और उनको पूर्व तीन वर्णों के साथ ही गिना जाता था।

वाल्मीकि के समय अस्पृश्यता तो कहीं थी ही नहीं।

इससे भी लगता है राम द्वारा शूद्र कहकर शम्बूक को मारने की कथा वाल्मीकि की लिखी हुई है ही नहीं। इसे बहुत आगे चलकर जोड़ा गया है।

जब भरत अयोध्या से वन की ओर राम को लौटाने के लिए चलते हैं, तो लगभग पूरी अयोध्या उनके साथ चल रही है।

वाल्मीकि ने यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तो एक दो श्लोकों में ही कहा है, किन्तु अन्य जातियों का विस्तार से वर्णन किया है। वे लिखते हैं—

मणिकाराश्च ये केचित् कुम्भकाराश्च शोभनाः।
मायूरिकाः क्राकचिका वेधका रोचकास्तथा।
दन्तकाराः सुधाकारा ये च गन्धोपजीविनः।।
सुवर्णकाराः प्रख्यातास्तथा कम्बलकारकाः।
स्नापकोष्णोदका वैद्या धूपकाः शौण्डिकास्तथा।।
रजकास्तुन्नवायाश्च ग्रामघोषमहत्तराः।
शैलूषाश्च सह स्त्रीभिर्यान्ति कैवर्तकास्तथा।।
समाहिता वेदविदो ब्राह्मणा वित्तसम्मताः।
गोरथैर्भरतं यान्तमनुजग्मुः सहस्रशः।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-८३, श्लोक-१२ से १६)

अर्थात् जो मणिकार (मणियों पर सान चढ़ाकर चमका देने वाले), अच्छे कुम्भकार, सूत का ताना-बाना करके वस्त्र बनाने की कला के विशेषज्ञ, शस्त्र निर्माण करके जीविका चलाने वाले, मायूरक (मोर पंख से छत्र-व्यजन बनाने वाले), क्राकचिक (आरी से लकड़ी चीरने वाले), वेधक (मणि-मोती आदि में छेद करने वाले), रोचक (दीवार-वेदी आदि में शोभा का सम्पादन करने वाले), दन्तकार (हाथीदाँत से अलग-अलग वस्तुओं का निर्माण करने वाले), सुधाकार (चूना

बनाने वाले), गन्धी, प्रख्यात सोनार, कम्बल और कालीन बनाने वाले, गरम जल से नहलाने का काम करने वाले, वैद्य, धूपक (धूपन क्रिया द्वारा जीविका चलाने वाले), शौण्डिक (मद्य विक्रेता), धोबी, दर्जी, गाँवों तथा गोशालाओं के महतो (ग्वालों की बस्ती के मुखिया), स्त्रियों सहित नट, केवट तथा समाहितचित्त सदाचारी वेदवेत्ता सहस्रों ब्राह्मण बैलगाड़ियों पर बैठकर भरत के पीछे-पीछे चले।

वाल्मीकि आगे लिखते हैं—

सबके वेश सुन्दर थे। सबने शुद्ध वस्त्र धारण कर रखे थे। सबके अङ्गों में ताम्बे के समान लाल रङ्ग का अङ्गराग लगा था।

देखिए—

वाल्मीकि ने ऊपर जो नाम बताये हैं, उनके लिए शूद्र शब्द का प्रयोग नहीं किया है। उनके व्यवसाय बताये हैं। तथापि पारम्परिक मान्यता के अनुसार ये न ब्राह्मण हैं, न क्षत्रिय हैं, न वैश्य हैं, तो शूद्र ही हुए।

ये राम को लौटा लाने के लिए उतने ही व्याकुल हैं, जितने स्वयं भरत। राम के लौटने की कल्पना से वे प्रसन्न हैं, परस्पर आलिङ्गन करते हैं। ब्राह्मण उनके साथ जा रहे हैं। कोई भेदभाव नहीं है। साथ ही उनकी वेशभूषा से लगता है कि वे अच्छी आर्थिक स्थिति में हैं।

तीन बातें स्पष्ट हैं—

(क) शूद्र शब्द अधिक प्रचलन में नहीं है। अन्यथा वाल्मीकि

को इतने नाम गिनाने नहीं पड़ते। शूद्र शब्द से काम चल जाता।

(ख) अस्पृश्यता नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कथित शूद्र साथ जा रहे हैं। बैलगाड़ियों में सभी बैठे हैं। परस्पर आलिङ्गन कर रहे हैं।

वाल्मीकि ने कहीं नहीं लिखा कि सभी अपने-अपने वर्ण-जाति का ही आलिङ्गन कर रहे हैं।

(ग) राम से सभी वर्णों को अगाध प्रेम है। निश्चय ही राम सबसे अगाध प्रेम करते होंगे, तभी सब उनको लौटाने के लिए व्यग्र, उत्साहित और प्रसन्न हैं। प्रेम नहीं करने वाले के लिए कोई क्यों जाता?

तो जब शूद्र शब्द अधिक प्रचलन में नहीं, अस्पृश्यता नहीं, सब बराबर, सबमें प्रेम, तो शूद्र शम्बूक और उसकी तपस्या से कथित अधर्म होने की पूरी कथा ही झूठ और षड्यन्त्र से भरी हुई नहीं हो जाती? अवश्य हो जाती है।

वाल्मीकि के समय शूद्र शब्द अधिक प्रचलन में नहीं था, इसका एक और सुन्दर उदाहरण आगे मिलता है।

भरत द्वारा बहुत आग्रह किये जाने के बाद भी राम वनवास छोड़कर अयोध्या लौटने के लिए तैयार नहीं होते। वे भरत को कहते हैं—

वीर भरत! तुम शत्रुघ्न और समस्त द्विजातियों के साथ अयोध्या लौट जाओ। प्रजा को सुख दो।

अयोध्यां गच्छ भरत प्रकृतीरुपरञ्जय।
शत्रुघ्नसहितो वीर सह सर्वैर्द्विजातिभिः।।

(वाल्मीकिरामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-१०७, श्लोक-१५)

हम पीछे देख आये हैं कि मणिकार, दर्जी, धूपक, कुम्हार, सूत्रकार, नट आदि बहुत-सी जातियाँ भी राम को वापस लौटाने गयी थीं। राम ने सबके लिए द्विजाति शब्द का प्रयोग किया है। द्विजाति–ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को कहते हैं। इनका दो बार जन्म माना जाता है। प्रथम तो जन्म और द्वितीय–यज्ञोपवीत संस्कार। राम सबको ही द्विजाति कह रहे हैं।

अर्थात् वे मणिकार, दर्जी, नट, सूत्रकार, कुम्हार आदि को द्विजाति में ही मानते हैं।

तो ये शूद्र नहीं हैं।

इसके बाद राम सबका यथायोग्य सत्कार करते हैं। कोई भेदभाव नहीं। और बाद में सबको अयोध्या के लिए विदा करते हैं।

तो ऐसा प्रतीत होता है कि राम के समय में शूद्र शब्द अधिक प्रचलन में ही नहीं है, और जो जातियाँ बाद में शूद्र में गिनी गयीं, वे सब उस समय बहुत अच्छी अवस्था में हैं। वे द्विजाति ही हैं।

तो शूद्र शम्बूक कहाँ से आ गया? और राम ने उसका वध भी कर दिया।

क्या यह कथित शूद्र शम्बूक-वध राम एवं वाल्मीकि की महिमा को दूषित करने के लिए लिखा गया प्रतीत नहीं होता? होता है, अवश्य होता है।

उत्तरकाण्ड में विसंगतियाँ

अभी तक हमने देखा कि आदिकवि वाल्मीकि के नायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम सभी से बराबर प्रेम करते हैं। उनकी दृष्टि में कोई ऊँच-नीच नहीं है। शूद्र शब्द प्रचलन में नहीं है।

तो उत्तरकाण्ड में शूद्र शम्बूक कहाँ से आ जाता है और राम उसका वध भी कर देते हैं।

अब उत्तरकाण्ड की विसंगतियाँ देखें–

१. बालकाण्ड में नारद द्वारा वाल्मीकि को बतायी गयी रामकथा में न सीता निर्वासन है, न शम्बूक वध।

उत्तरकाण्ड में नारद ही शूद्र की तपस्या की ओर राम का ध्यान दिलाते हैं, जो उसके वध का कारण बनता है।

२. बालकाण्ड में अहल्या एवं इन्द्र का समागम सहमति से होता है।

उत्तरकाण्ड में इन्द्र द्वारा अहल्या का बलात्कार बताया गया है।

३. युद्धकाण्ड में सीता की अग्निपरीक्षा में अग्निदेव साक्षी है।

उत्तरकाण्ड में इन्द्र को साक्षी बताया गया है।

४. युद्धकाण्ड में सभी वानर-भालू आदि को विदाई दे दी गयी है।

उत्तरकाण्ड में वे उपस्थित हैं। उनकी दुबारा विदाई बतायी गयी है।

५. युद्धकाण्ड में पुष्पक विमान उसके वास्तविक स्वामी कुबेर को लौटा दिया गया है।

उत्तरकाण्ड में पुष्पक लौट आता है और कहता है कि कुबेर ने उसे वापस भेज दिया। राम अपने स्वभाव के विपरीत उसे अपने पास रख लेते हैं। जबकि इससे पहले वे गुह, सुग्रीव और विभीषण द्वारा दिये जा रहे राज्य एवं शरभङ्ग और सुतीक्ष्ण मुनियों द्वारा दिये जा रहे तपस्या के फल को लेने से साफ इनकार कर देते हैं। किसी से कुछ लेकर रखना राम के चरित्र के सर्वथा विपरीत है।

६. बालकाण्ड में रामायण का गान कर सुनाने वाले कुशीलव के लिए यह कहीं नहीं लिखा कि ये सीता के पुत्र हैं।

उत्तरकाण्ड में रामायण का गान कर सुनाने वाले कुश-लव सीता के पुत्र हैं।

७. युद्धकाण्ड में रावण द्वारा पुञ्जिकस्थला का बलात्कार करने पर ब्रह्माजी द्वारा रावण को शाप दिया जाना बताया गया है। शाप के अनुसार आगे अन्य किसी स्त्री का बलात्कार करने पर उसके सिर के सौ टुकड़े हो जाएँगे।

इसी कारण रावण सीता के साथ कोई जबरदस्ती नहीं कर सका।

उत्तरकाण्ड में रावण रम्भा का बलात्कार करता है। तब नलकूबर (रम्भा का होने वाला पति) रावण को ऐसा ही शाप देता है।

दोनों शाप एक साथ नहीं चल सकते।

पुञ्जिकस्थला के प्रसंग में ब्रह्माजी का शाप होने पर रावण रम्भा का बलात्कार नहीं कर सकता।

रम्भा के प्रसंग में नलकूबर का शाप सही होने पर रावण पुञ्जिकस्थला का बलात्कार नहीं कर सकता।

८. युद्धकाण्ड में वाल्मीकि ने फलश्रुति और ग्रन्थमाहात्म्य बताया है। इसके साथ ही रामायण ग्रन्थ पूर्ण हो जाता है।

उत्तरकाण्ड इसके बाद भी लिखा और जोड़ा गया है। उसमें भी फलश्रुति और ग्रन्थमाहात्म्य बताया गया है।

और भी कई विसंगतियाँ हैं—उत्तरकाण्ड में।

यदि उत्तरकाण्ड को सही मानकर राम द्वारा सीता निर्वासन और राम द्वारा शम्बूक वध को सही मानते हैं, तो इससे राम का चरित्र ही नीचे नहीं गिरता, अपितु वाल्मीकि भी झूठे सिद्ध होते हैं कि वे अपने ही लिखे का उत्तरकाण्ड में खण्डन कर रहे हैं।

तो क्या पहले छह काण्ड उन्होंने गलत लिख दिये? नहीं, उत्तरकाण्ड उनका लिखा ही नहीं है।

उत्तरकाण्ड की भाषा पूर्व के छह काण्डों से भिन्न है। कहाँ उनमें से कुछ सर्गों को छोड़कर उन काण्डों की कसी हुई, काव्य के गुणों से भरी भाषा, कहाँ उत्तरकाण्ड की सपाट बयानी। वाक्यरचना, संवाद, स्थितियों के वर्णन में वाल्मीकि की अद्भुत शैली उत्तरकाण्ड में कहीं नहीं परिलक्षित होती है। कहीं से भी उत्तरकाण्ड वाल्मीकि की रचना नहीं है।

वाल्मीकि राम के समकालीन हैं। अत: वाल्मीकि के सामने शम्बूक वध जैसी घटना हुई ही नहीं थी। होती तो वे अवश्य लिखते। अत: राम ने शम्बूक का वध किया, यह सिद्ध नहीं होता है।

दूर की कौड़ी

अब एक सम्भावना रह जाती है कि किसी और कवि ने शम्बूक वध देखा और लिखा। तो हमारा प्रश्न है कि उसने वाल्मीकि के नाम से क्यों लिखा?

यदि वह कवि वाल्मीकि का समकालीन है, तो वाल्मीकि उसे अपना नाम जोड़ने देते क्या? क्योंकि वह जो कुछ लिख रहा है, उससे तो वाल्मीकि ही झूठे सिद्ध होते हैं।

यदि यह कहें कि वाल्मीकि के गोलोकगमन के बाद ऐसी घटनाएँ घटीं, तो वह भी सही नहीं, क्योंकि उनने युद्धकाण्ड में राम के परलोकगमन तक का वर्णन किया है। राम ने ग्यारह हजार वर्षों तक राज्य किया, यह तो यही संकेत देता है कि वाल्मीकि ने राम का अन्तकाल भी देखा था। यदि वे पहले गोलोकवासी होते, तो यह कैसे लिख सकते थे।

निष्कर्ष

अब एक ही रास्ता बचता है। 'राम द्वारा शम्बूक का वध' की कहानी वाल्मीकि के हजारों साल बाद लिखी गयी, और चालाकी से वाल्मीकिरामायण में जोड़ी गयी। राम और वाल्मीकि, दोनों को नीचा दिखाने के लिए।

उत्तरकाण्ड वाल्मीकि द्वारा रचित नहीं है, इसको विस्तारपूर्वक 'सीता निर्वासन : एक झूठी कहानी' के प्रसंग में बताया जा चुका है।

अतः सिद्ध हुआ

वाल्मीकि ने उत्तरकाण्ड लिखा ही नहीं।

राम ने न तो शूद्र शम्बूक को मारा,

न ही सीता का निर्वासन किया।

जयतु वाल्मीकिः।
जयतां सीतारामौ।
जयन्तु रामायणपराः।।

आखिर इन शोध आलेखों की आवश्यकता क्या है?

लेखक के बहुत से परिचित कहते हैं कि अब इन आलेखों को लिखने का कोई लाभ नहीं। श्रीराम और सीता को लीला संवरण किये लाखों वर्ष बीत गये। अब इन बातों को कहने से क्या होना-जाना है? अब इनका समाज से क्या सरोकार?

प्रश्न अपनी जगह सही लगता है। इसका उत्तर यों समझा जा सकता है कि एक दिन एक विदुषी महिला से चर्चा हो रही थी। उन्होंने एकाएक कहा कि राम द्वारा सीता के निर्वासन ने भारतीय समाज की स्त्रियों पर गहरा प्रभाव डाला है। वह आज तक दिखाई देता है। आज भी स्त्री के लिए कहा जाता है कि वह भले ही कितनी समर्पित हो, उसका अन्त सीता जैसा होता है। यानी पुरुष उसके लिए किसी प्रकार का निर्णय ले सकता है, जिसका वह विरोध नहीं कर सकती।

समाज में किसी स्त्री के साथ कुछ गलत होता है, तो लोग उसको समझाते हुए कहते हैं—जब सीता को राम वन भेज सकते हैं, तो तुम्हारे साथ गलत हुआ, तो क्या आश्चर्य?

कुछ वर्ष पहले एक प्रसिद्ध वकील ने राम को बहुत बुरा पति बताया था। बिहार में सीतामढ़ी के एक वकील ने भगवान् राम

पर घरेलू हिंसा का केस किया था कि उन्होंने भगवती सीता के साथ अन्याय किया। जयपुर (राजस्थान) के साहित्य उत्सव, जिसे जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल कहते हैं, उसमें एक लेखिका ने कहा था कि सीता यदि आज के दौर में होती, तो राम से तलाक ले लेती।

बहुत से रावणवादी राम द्वारा सीता के निर्वासन का मुद्दा उठाते रहते हैं।

इन चर्चाओं में ही ऊपर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर हैं। इसलिए यह बताना आवश्यक हो जाता है कि सीता का निर्वासन राम द्वारा किया ही नहीं गया था। वह ग्यारह हजार वर्षों तक राम के साथ ही महारानी रहीं। उन्होंने इस विस्तृत काल में प्रजा का शासन और सेवा की।

जहाँ तक शम्बूक-वध का प्रसङ्ग है, वह तो आज सबसे जोर-शोर से उठाया जाता है। जब अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के बन्धुओं पर किसी प्रकार का अन्याय होता है, तो कथा शम्बूक वध से ही प्रारम्भ कर दी जाती है।

दूसरे मत-पंथों को अपनाते समय सबसे अधिक जोर इसी बिन्दु पर दिया जाता है कि मतान्तरित व्यक्ति राम और कृष्ण को अपना भगवान् नहीं मानेगा। कारण वही कि दोनों सामन्तवादी प्रकृति के हैं और उन्होंने अन्त्यजों को दबाने का प्रयत्न किया। राम ने शम्बूक को मारा और कृष्ण ने कर्ण को मारने के लिए अर्जुन को प्रेरित किया।

अतः शम्बूक वध की झूठी कथा को भी सामने लाना आवश्यक है।

ये प्रश्न समाज में लगातार उठते रहते हैं। रामायण के कथावाचकों से ये प्रश्न पूछे जाते हैं। बिहार में एक बड़े राजनेता ने एक प्रसिद्ध कथावाचक सन्त से यह प्रश्न पूछा था। सन्त ने प्रश्न की अनदेखी कर दी। भारतीय संसद में एक वरिष्ठ सांसद ने अपने भाषण में कथित सवर्ण जातियों का कथित अवर्ण जातियों पर वर्चस्व की चर्चा करते हुए, ये कुछ प्रश्न रखे थे—

(क) राम द्वारा सीता का निर्वासन क्यों हुआ?

(ख) राम द्वारा शम्बूक की हत्या क्यों की गयी?

(ग) द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अँगूठा क्यों कटवाया?

(घ) भरी सभा में द्रौपदी के चीरहरण का प्रयास क्यों हुआ?

ये प्रश्न आज भी लोगों को मथ रहे हैं। इसलिए इनके समुचित उत्तर के बिना समाज में ऐसी चर्चाएँ चलती रहेंगी।

लेखक ने प्रथम दो प्रश्नों के उत्तर खोजने की विनम्र चेष्टा की है। आगे के दो प्रश्नों के उत्तर भी खोजने का प्रयास किया जाएगा।

भारतीय संस्कृति में राम और कृष्ण, दो सबसे बड़े प्रतिमान हैं। इसे न केवल कथित सवर्ण जातियाँ, अपितु कथित अवर्ण जातियाँ भी स्वीकार करती हैं। राम नाम के जितने व्यक्ति अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति में मिलेंगे, उतने सवर्णों में शायद ही मिलें। विचित्र-विचित्र नाम–कुरडा, पेमा, मांगी, फेकू, फैलू, मस्त आदि नामों में राम जोड़कर उसे सार्थक बना दिया जाता है। बिहार में अनुसूचित जाति का बड़ा वर्ग अपने जातिसूचक नाम के बदले राम लगाता रहा है। यह राम की

सार्वजनीन व्यापकता है। राम इस देश के भगवान् नहीं, इस देश के प्राण हैं।

इसलिए भारतीय संस्कृति के विरोधियों को लगता है कि जब तक राम के चरित्र को कलङ्कित नहीं किया जाएगा, तब तक यह संस्कृति सीना तानकर संसार के सम्मुख खड़ी रहेगी। इसलिए राम को कलङ्कित कर इस संस्कृति को लज्जावनत करने का प्रयास किया जाता है।

अत: राम के चरित्र की निष्कलङ्कता को बताने की, सीता के गौरव को अक्षुण्ण रखने की और अधिक आवश्यकता है। साथ ही यह अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति समाज तथा स्त्री समाज में भी गौरव का भाव भरेगा कि राम उनके कितने बड़े हितैषी और उपकारक रहे हैं। संस्कृति के स्वर्णिम अध्याय में यदि कुछ गलत लिखा गया है, तो उसके परिमार्जन का प्रयत्न करना हम सबसे अपेक्षित है।

इसके लिए बड़े साहस की आवश्यकता होती है। हजारों वर्षों से एक लीक पर चलते हुए समाज को दूसरी लीक पर चलाना अत्यन्त दुरूह एवं दुष्कर कार्य है।

एक उदाहरण से इसे समझें। किसी प्रेस से वाल्मीकिरामायण का सुन्दर प्रकाशन हुआ है। हिन्दी अनुवाद सहित प्रचलित सम्पूर्ण वाल्मीकिरामायण की हृदयग्राही प्रस्तुति है। तथापि उसमें कई सर्ग ऐसे हैं, जिनको स्वयं टीकाकार ने प्रक्षिप्त माना है, जैसे इन्द्र द्वारा सीता को अशोकवाटिका में खीर देना, कार्यार्थी कुत्ते का राम के पास आगमन आदि। पर उसे ग्रन्थ से हटाने का साहस वे नहीं कर

सके। ये प्रक्षिप्त सर्ग निर्बाध इस ग्रन्थ यानी वाल्मीकिरामायण से जुड़े हैं।

लेखक वाल्मीकिरामायण का एक विनम्र अध्येता है। उसकी दृष्टि में बालकाण्ड के कई सर्ग, अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड के बीच के कतिपय सर्ग और पूरा उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है। यदि इनको हटा दिया जाय, तो कलेवर में वाल्मीकिरामायण भले ही छोटा हो जाय, पर काव्य और धर्म की दृष्टि से यह और अधिक महान् ग्रन्थ की आभा से चमक उठेगा।